# अक्रम एक्सप्रेस डाइजेस्ट

( चित्रकथा भाग- २)

# प्रस्तावना

त्रिमंत्र
नमो वीतरागाय
नमो अरिहंताणं
नमो सिद्धाणं
नमो आयरियाणं
नमो उवज्झायाणं
नमो लोए सव्वसाहूणं
एसो पंच नमुक्कारो, सव्व पावप्पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलम ॥१॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥२॥
ॐ नमः सिवाय ॥३॥

जय सच्चिदानंद

कहानी और उम्र को कोई सरोकार नहीं है। वह एक ऐसा प्रभावशाली माध्यम है, जिसके द्वारा कोई भी संदेशा सरलता से व्यक्ति के हृदय में उतर जाता है और याद भी रह जाता है, फिर वह बालक हो, युवा हो या वृद्ध हो। उसमें भी कहानी यदि चित्रों के साथ हो तब तो जैसे सोने पे सुहागा। जब तक पूरी पुस्तक न पढ़ ले, तब तक उसे हाथ से छोड़ने का मन ही नहीं करता।

दादा भगवान परिवार के बालविज्ञान विभाग की ओर से खास तौर पर बच्चों के लिए हर महीने प्रसारित होनेवाली "अक्रम एक्सप्रेस" नाम की मैगज़ीन में सुंदर सीख देतीं छोटी-छोटी चित्रकथाएँ प्रकाशित होती है। उन्हीं कथाओं का संकलन इस पुस्तक में किया गया है, जो पाठक को सही समझ हृदयगत करवाने में उपयोगी होगी। परम पूज्य दादाश्री कहते थे कि सही समझ उसे कहते हैं कि जिसे हम कभी भी भूल नहीं पाएँ और जो धीरे-धीरे आचरण में आ जाए।

इस पुस्तक को पढ़नेवाला हर एक व्यक्त सरलता से सम्यक समझ प्राप्त करके एक आदर्श जीवन जी सकें और किसी भी परिस्थिति का आसानी से हल लाकर, हमेशा आनंद में रह सके, यही अभ्यर्थना है।

-जय सच्चिदानंद


प्रकाशक
महाविदेह फाउन्डेशन
५, ममतापार्क सोसायटी, नवगुजरात कॉलेज के पीछे,
उस्मानपुरा, अहमदाबाद-३८००१४, गुजरात, भारत
फोन : (०७९) २७५४०४०८

E-mail:info@dadabhagwan.org
Website: www.dadabhagwan.org


©: All Rights Reserved – Mahavideh Foundation


Address as above

मुद्रक:
महाविदेह फाउन्डेशन(प्रिन्टिंग डिविज़न)
पार्श्वनाथ चेम्बर्स, नई रिज़र्व बैंक के पास,
इन्कम टैक्स, अहमदाबाद-१४, गुजरात, भारत
फोन:(०७९)२७५४२९६४

प्राप्ति स्थान :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी, अहमदाबाद-कलोल हाई वे, अडालज
जिला : गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात, भारत

E-mail: balvignan@dadabhagwan.org
Available on online store :
https://store.dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org
प्रथम आवृति : १००० कोपी, मई २०१४
मूल्य:₹ ४५

Gifted To: .....
From: .....
On the occession of: .....

# अनुक्रमणिका


| क्रम | अक्रम एक्सप्रेस का महीना और वर्ष | टॉपिक | कहानी का नाम | पेज नंबर |
|---|---|---|---|---|
| १ | अक्टू '११ | टी.वी. देखने की सीमा | चित्त के फोटो | १ |
| २ | नव '११ | सेवा | सेवा की शुरूआत घर से | ४ |
| ३ | जन '१२ | कुसंग से दूर ही अच्छे | कुसंग दु:ख ही लाएगा | ७ |
| ४ | फर '१२ | मैं तुझे देख लूँगा | बैर से बैर खत्म नहीं होता | ११ |
| ५ | मई '१२ | छुट्टियों का मज़ा | भाव विज्ञान | १५ |
| ६ | जून '१२ | सुख की दुकान | सुख की दुकान | १९ |
| ७ | जुलाई '१२ | अबोला | असली बुद्धिमान | २३ |
| ८ | अगस्त '१२ | सिन्सियारिटी | जागे तब से सवेरा | २६ |
| ९ | सित '१२ | शिकायत? नहीं, "एज्जस्ट" | एज्जस्टमेन्ट का प्रताप | २९ |
| १० | अक्टू '१२ | कॉपीकेट | नक़ल नहीं, असल ही चाहिए | ३३ |
| ११ | नव '१२ | दूसरों की भूल निकालने की बुरी आदते | हमारा एक टेढ़ा, आपके तो अठारह टेढ़ | ३६ |
| १२ | दिस '१२ | आड़ाई– सरलता | आड़ाई से रह गया | ३९ |
| १३ | जन '१३ | गुरुकृपा | गुरु का विनय | ४३ |
| १४ | फर '१३ | टालो बोरियत | फर्ज़ | ४६ |
| १५ | मार्च '१३ | निश्चय पहुँचाए ध्येय तक | निश्चय की शक्ति | ४९ |
| १६ | अप्रैल '१३ | प्रार्थना पहुँचे परमात्मा को | अंदर बैठे हुए भगवान से प्रार्थना | ५० |
| १७ | मई '१३ | छुट्टियों का मज़ा | जैसी चिंतना करोगे वैसे हो जाओगे | ५६ |
| १८ | जून '१३ | मुझे क्या? | बस का एक यादगार सफर | ६० |
| १९ | अगस्त '१३ | लोभ को नहीं रोक! | फँसाव | ६३ |
| २० | सित '१३ | मैं रह गई! | मोस्ट वैल्यूबल प्लेयर | ६६ |
| २१ | अक्टू '१३ | मीठी वाणी | कड़वी वाणी का असर | ७० |
| २३ | दिस '१३ | सुख या दु:ख मान्यता से ही! | उनका स्वर्ग | ७४ |
| २४ | जन '१४ | विरोधी उपकारी | सूरदास | ७८ |
| २५ | फर '१४ | प्रामाणिकता | वीडियो रिकॉर्डिंग | ८१ |

टॉपिक : 'टी.वी. देखने की सीमा'

# चित्त के फोटो

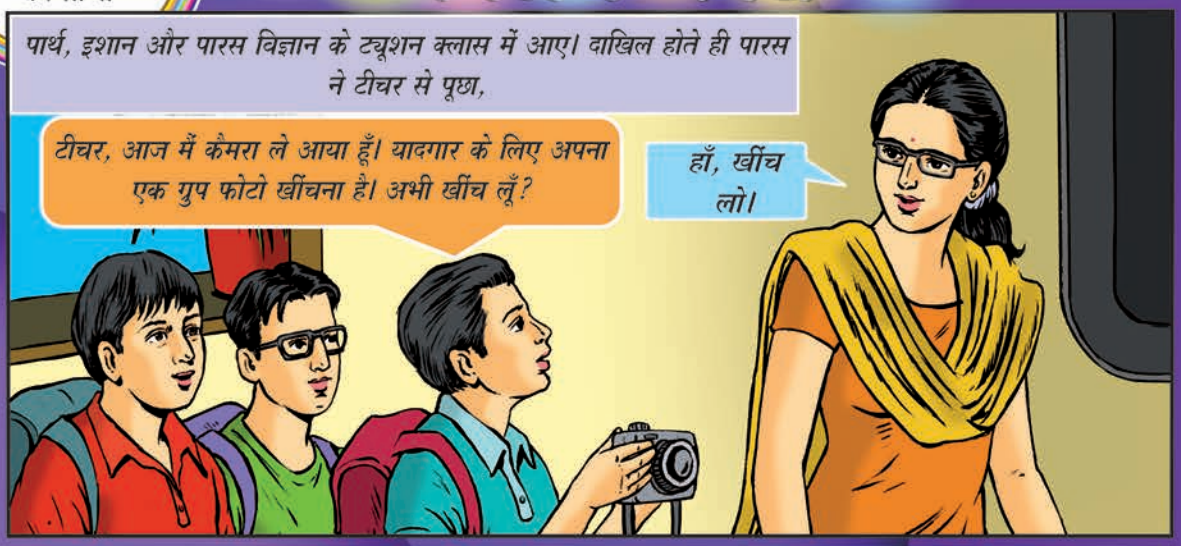

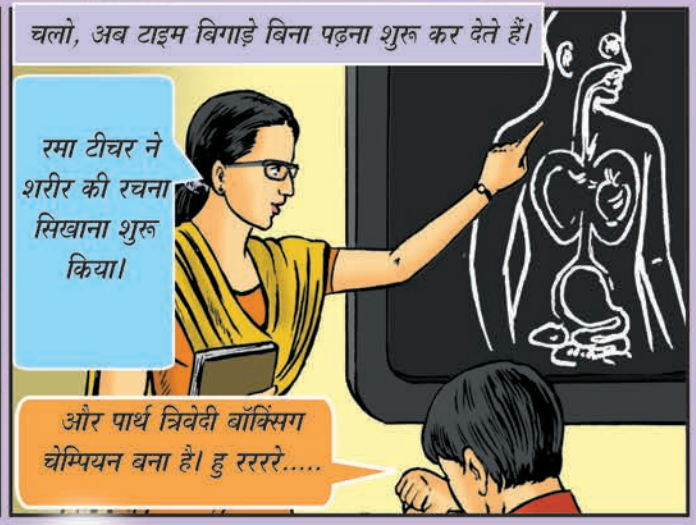

पार्थ, कहाँ खो गए? मैंने क्या सिखाया अभी? शरीर की रचना के बारे में बताओ तो।
ओह... सॉरी टीचर। क्या पूछा आपने? फिर से कहेंगे, मेरा ध्यान नहीं था।
हं... मैंने यह पूछा कि कल रात को टी.वी. पर तुमने कौन सी पिक्चर देखी थी?
आपको कैसे पता चला? मैंने कल बॉक्सिंग के खेलवाली पिक्चर देखी थी। मुझे अभी वह याद आ रहा था।
इसीलिए अभी पढ़ने के समय साहब पिक्चर में खोए हुए हैं। इस टी.वी. सिनेमा में मज़ा आती है, लेकिन मज़ा लेने से चित्त बिगड़ता रहता है और इसीलिए फिर एकाग्रता नहीं रहती।
चित्त?
टीचर, चित्त मतलब क्या?
अभी पारस के कैमरे में फोटो क्यों नहीं खिंचा?
रोल खत्म हो गया है, इसलिए।
हं। इसी तरह अपने शरीर में चित्त होता है। उसका काम फोटो खींचना होता है। वह जहाँ एकाग्र होता है, वहाँ फोटो खींच लेता है और याद रख लेता है।
टी.वी. और सिनेमा के कारण उसकी एकाग्रता की शक्ति उसीमें खर्च हो जाती है। इसलिए पढ़ते समय वह एकाग्र नहीं हो पाते। परिणाम स्वरूप पढ़ा हुआ याद नहीं रहता।

टी.वी. और सिनेमा के कारण एकाग्रता की शक्ति क्यों टूट जाती है?
जैसे रोल पूरा हो जाने से ज्यादा फोटो लेने की जगह नहीं रहती, वैसे ही चित्त में टी.वी. या सिनेमा के दृश्य याद रह जाने से पढ़ा हुआ याद रखने की जगह नहीं रहती ।

ओह, आपकी बात सही है टीचर, अभी मेरे अंदर बॉक्सिंग ही घूम रहा था इसलिए आप जो पढ़ा रहीं हैं, उसमें मेरा ध्यान स्थिर नहीं हो रहा था।
तो अब पिक्चर के सभी फोटो मिटा देना।
वह किस तरह?

रोज़ पढ़ने से पहले आँखें बंद करके १० मिनट एक-एक अक्षर पढ़ सकें इस तरह "दादा भगवान ना असीम जय जयकार हो" बोलने से चित्त शुद्ध होता है और एकाग्रता बढ़ती है।
मैं ज़रूर करूँगा।
लेकिन अब सब टी.वी. देखना कम करोगे न?

# सेवा की शुरुआत घर से

टॉपिक : 'सेवा'

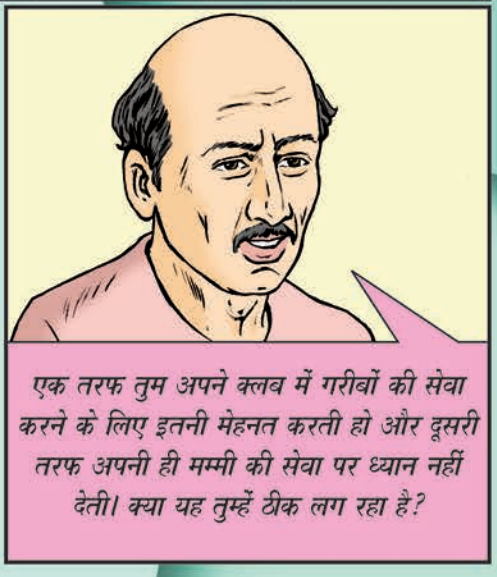

माता-पिता की सेवा सबसे बड़ा धर्म है। सेवा की शुरूआत घर से ही होनी चाहिए। पहले माता-पिता फिर दूसरे।

लेकिन आज की मीटिंग बहुत महत्व की है। वह रद्द नहीं कर सकेंगे।

ऐसा कहकर दिया भागी...

नित्या के घर,

एक खुशखबरी है! विश्रांति संस्था को अपना काम बहुत अच्छा लगा। संस्था के चेयरमेन ने प्रिन्सिपल सर से अपने काम के बारे में बात की है और आज वह स्कूल में हमें सेवा-अवार्ड भी देनेवाले हैं।

दिया, नित्या और अंजली ने अपने स्कूल का नाम रोशन किया हैं। गरीबों और अनाथों की सेवा की, और उनके खूब आशीर्वाद लिए हैं। सर्व शिक्षक-मंडल, अभिवावकों और विद्यार्थियों की तरफ से मैं इन सेवाभावी विद्यार्थियों को खूब शुभकामनाएँ देता हूँ और इस सेवा-अवार्ड से सम्मानित करता हूँ।

एक और खुशखबरी है। कल, एक न्यूज़पेपर रिपोर्टर अपने स्कूल में इन विद्यार्थियों का फोटो लेने आएँगे और इनके सर्विस क्लब के बारे में एक लेख भी छपवाएँगे।

अभिनंदन! अभिनंदन!

आज स्कूल जाने के लिए दिया खूब उत्साहित थी। तैयार होकर वह निकल ही रही थी। तभी फोन की घंटी बजी।

दिया, आज मैं स्कूल नहीं आ पाऊँगी। मम्मी को तेज़ बुखार है और घर पर और कोई नहीं है।

लेकिन आज तो न्यूज़पेपर रिपोर्टर आनेवाले हैं। अपना फोटो अखबार में छपनेवाला है। ऐसा मौका तुम कैसे खो सकती हो?

मम्मी की सेवा करने का मौका भी मैं कैसे खो सकती हूँ? क्लब के बारे में तुम सब बता ही दोगी न। और मेरा फोटो नहीं छपे तो उसकी मुझे जरा भी परवाह नहीं है। लेकिन मेरे लिए मम्मी की सेवा इस अखबार के फोटो से अनेक गुना अधिक महत्व की है।

स्कूल में न्यूज़पेपर के सामने फोटो खिंचवाते,

तुम्हारी तीसरी मित्र कहाँ है?

वह घर पर है। उसके मम्मी को बुखार आने के कारण नहीं आ सकी।

ओह, मतलब वह अभी उसकी मम्मी की सेवा में है। यह फोटो तो खास लेने जैसा है। लोगों को संदेश मिले न कि सेवा की शुरूआत घर से ही होती है। चलो, वहाँ चलें...

अंजली, सचमुच तुम्हारे जैसी लड़कियाँ घर और समाज दोनों के लिए मददगार हैं। तुम समाज के लिए एक आदर्श उदाहरण हो।

यह सुनकर दिया को अपनी भूल पर बहुत ही पश्चाताप हुआ।

मैंने तो सिर्फ "वाह-वाह" सुनने के लिए सेवा की, लेकिन खरी सेवा तो अंजली ने की कहलाएगी। दादाजी सही कह रहे थे कि "सेवा की शुरूआत घर से ही होनी चाहिए।"

पंचिक :
'कुसंग से
दूर ही अच्छे'

# कुसंग दुःख ही लाएगा

गर्मियों के दिन थे। मिली, बिली और विन्की नाम की तीन मेहनती चींटियाँ सर्दियों के लिए खाना इकट्ठा कर रही थीं। तभी टेडी नाम का एक रखड़ू टिड्डा आया और उनका रास्ता रोककर बैठ गया।

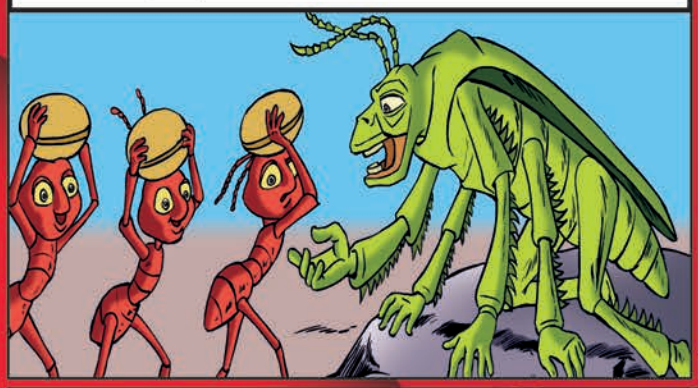

हमें क्यों परेशान करते हो? प्लीज़, हमें काम करने दो। और तुम भी अपना काम करो। तुम्हें सर्दियों के लिए तैयारी नहीं करनी?

पसीने से भीगी हुई विन्की थोड़ा आराम करने बैठी, तभी टेडी आया और उसे चिढ़ाने लगा।

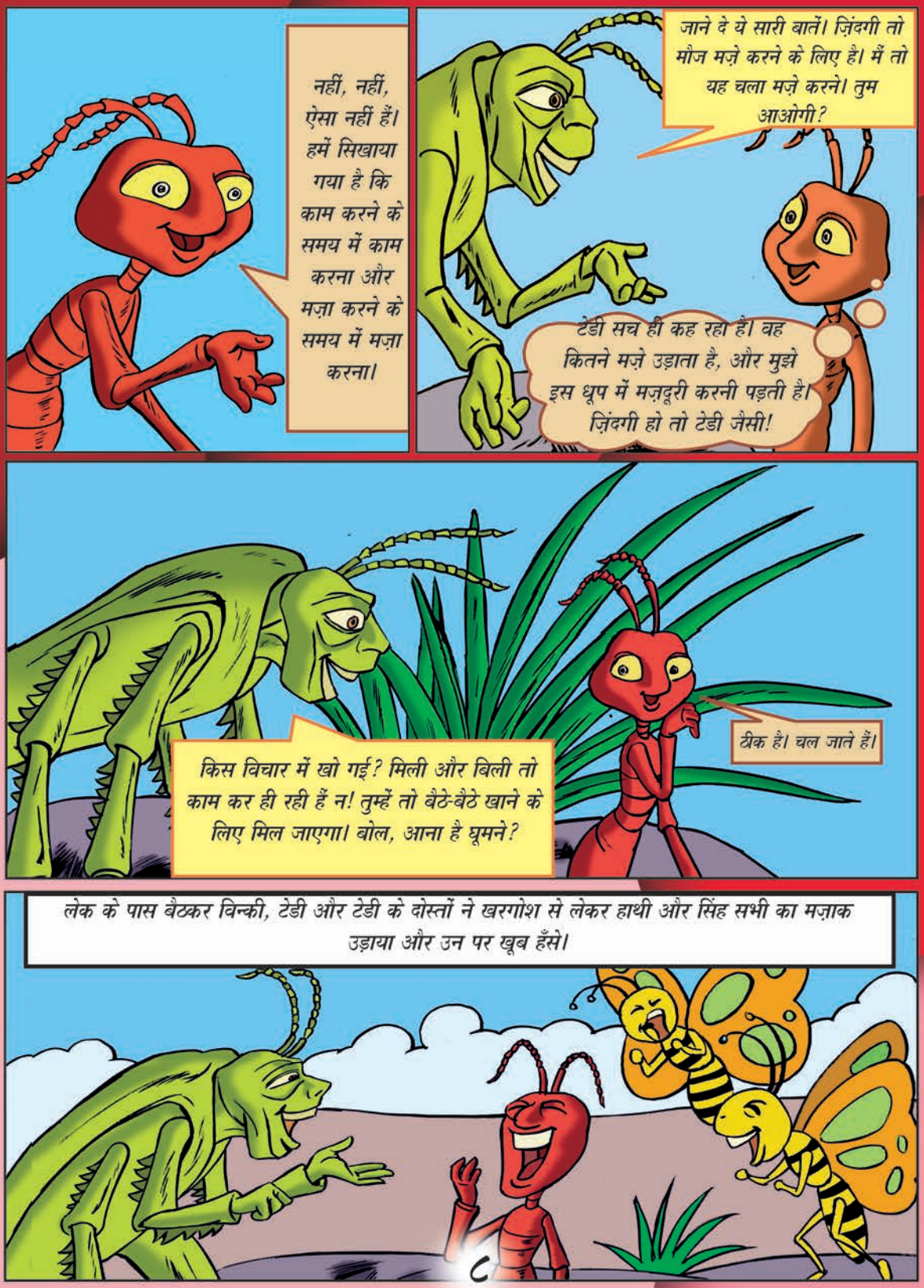
नहीं, नहीं, ऐसा नहीं हैं। हमें सिखाया गया है कि काम करने के समय में काम करना और मज़ा करने के समय में मज़ा करना।
जाने दे ये सारी बातें। ज़िंदगी तो मौज मज़े करने के लिए है। मैं तो यह चला मज़े करने। तुम आओगी?
टेडी सच ही कह रहा है। वह कितने मज़े उड़ाता है, और मुझे इस धूप में मज़दूरी करनी पड़ती है। ज़िंदगी हो तो टेडी जैसी!
किस विचार में खो गई? मिली और बिली तो काम कर ही रही हैं न! तुम्हें तो बैठे-बैठे खाने के लिए मिल जाएगा। बोल, आना है घूमने?
ठीक है। चल जाते हैं।
लेक के पास बैठकर विन्की, टेडी और टेडी के दोस्तों ने खरगोश से लेकर हाथी और सिंह सभी का मज़ाक उड़ाया और उन पर खूब हँसे।

दूसरे दिन, मिली और बिली ने,

विन्की, टेडी की सौबत में बहुत खतरा है। उसका संग रखेगी तो उसके सारे खराब संस्कार तुममें आ जाएँगे और तुम्हारे सारी ज़िंदगी के संस्कारों पर पानी फिर जाएगा।

अरे मिली, तुम चिंता मत करो। मैं ध्यान रखूँगी कि खराब आदतों की असर मुझ पर न पड़े।

ऐसा संभव ही नहीं है कि कुसंग का असर नहीं हो। हम तुम्हें चेतावनी देते हैं। तुम इन कुसंगियों के टोले में रहोगी तो दुःखी हो जाओगी।

लेकिन विन्की ने, मिली और बिली की बात नहीं मानी। टेडी और उसके दोस्तों के साथ घूमने में उसे मज़ा आने लगा था। इसलिए अब काम में भी वह गुल्ली मारने लगी और मिली और बिली की परवाह नहीं करती थी।

अंत में विन्की पर खराब सौबत का असर हो ही गया। एक दिन...

मुझे एक तरकीब सूझी है। आज पार्टी के लिए मैं मिली और बिली के स्टोर हाउस में से छिपकर थोड़ा खाना ले आऊँगी।

वाह! बहुत अच्छा!

इस तरह दिन बीतने लगे। दो तीन महीने कड़ाके की ठंड पड़ी। हिम वर्षा हुई। सब सूख गया। टेडी और विन्की खाने को तरस गए। वे सबसे खाना माँगने लगे।

टॉपिक:
मैं तुझे देख लूँगा

# बैर से बैर खत्म नहीं होता

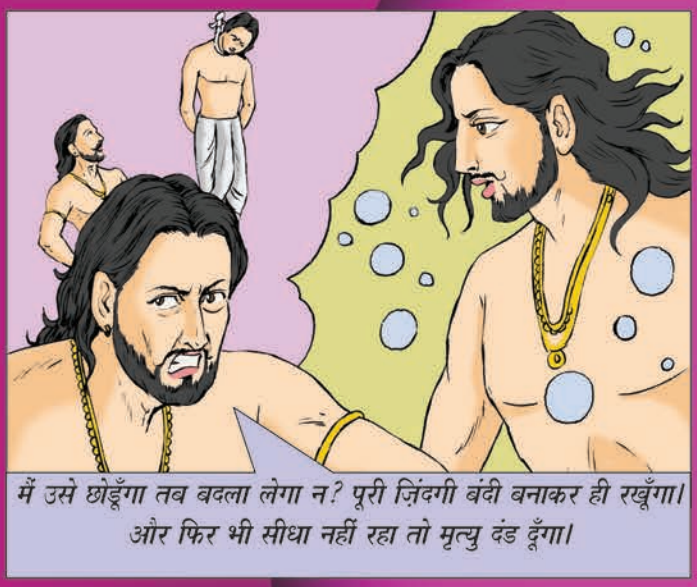
मैं उसे छोड़ूँगा तब बदला लेगा न? पूरी ज़िंदगी बंदी बनाकर ही रखूँगा। और फिर भी सीधा नहीं रहा तो मृत्यु दंड दूँगा।

मृत्यु जीवन का अंत ला सकती है, बैर का नहीं। बैर तो वह दूसरे जन्म में भी लेकर ही छोड़ेगा। बैर तो जन्मोंजन्म चलता है।
ये सब सिर्फ बातें ही हैं। अगला जन्म किसने देखा है?

अगला जन्म नहीं देखा तो पिछला जन्म तो देखा है। यह बैर भी पिछले कितने जन्मों से चला आ रहा है।
मैं कैसे मान सकता हूँ?

आँखें बंद करो, तुम्हें दिखाता हूँ।
बलराज आँखें बंद करता है।
क्या दिख रहा है?

पिछले जन्म में बलराज और सुमंत दो जुड़वा भाई थे। एक ही राजा के कुंवर। बलराज का नाम प्रीतम है और सुमंत का नाम किशन। राजगद्दी लेने के लिए किशन ने प्रीतम के साथ षड्यंत्र रचा और प्रीतम को किशन ने मार डालने की योजना बनाई।

अचानक एक दिन, किशन ने प्रीतम पर तलवार से हमला किया। प्रीतम अंतिम क्षण गिन रहा था।

मैं तुझे नहीं छोड़ूँगा। अगले जन्म में भी तुझे मारकर ही रहूँगा।

बाद के जन्म में, बलराज का जीव एक साँप की तरह जन्मा। एक दिन, उस साँप ने भेड़िये को ऐसा डसा कि भेड़िया तड़प-तड़पकर मर गया।

जा! जा! ... इस जन्म में तुम मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सके तो अगले जन्म में क्या कर लोगे?

इस तरह, एक के बाद एक बलराज को अपने आठ जन्म दिखे। हर जन्म में बलराज का जीव सुमंत के जीव को मार ही डालता था। यह देखकर वह सहमा गया और जाग गया।

अरे भगवान! आठ-आठ जन्मों से मैं बैर लेता आ रहा हूँ, फिर भी चैन नहीं है। यह कहाँ जाकर रुकेगा?

अब इस बैर को बंद करने का एक ही रास्ता है। सुमंत को उसका मेवापुर वापस दे दूँ। मैं बदला लूँगा तो वह भी बदला लिए बिना नहीं रहेगा और मैं जन्मोंजन्म इस बैर के कारण भटकता रहूँगा।
दूसरे दिन सुबह।
सिपाहियों! सुमंत और उसके परिवार को आदर और सम्मान के साथ मेवापुर छोड़ आओ।

और फिर बलराज अपने पुत्र को राजगद्दी सौंपकर अपने बैर का प्रायश्चित करने वन में चले गए।

# भाव विज्ञान

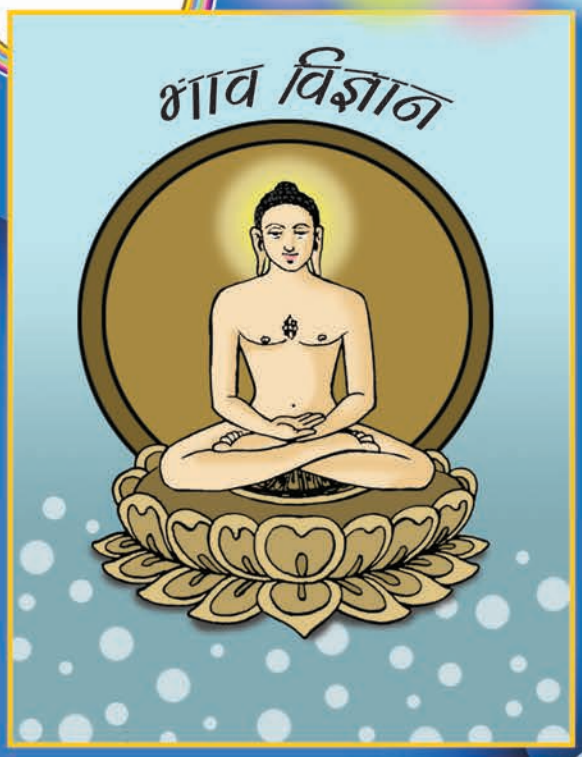
भाव विज्ञान

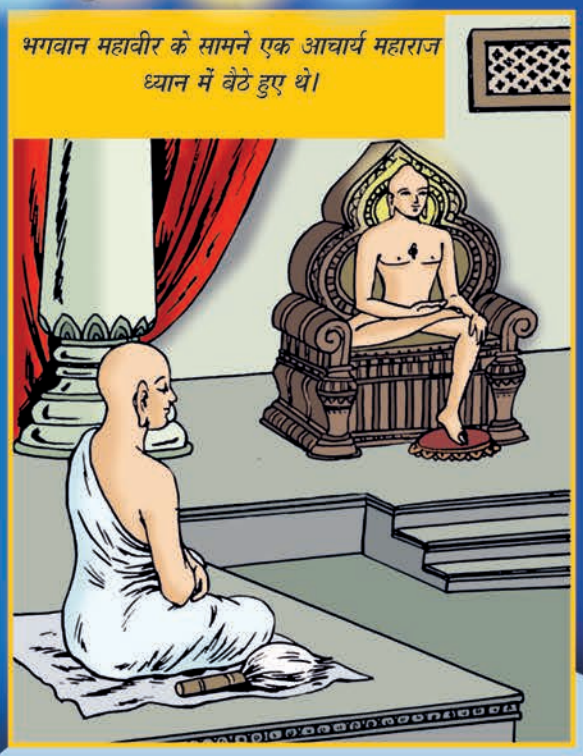
भगवान महावीर के सामने एक आचार्य महाराज ध्यान में बैठे हुए थे।

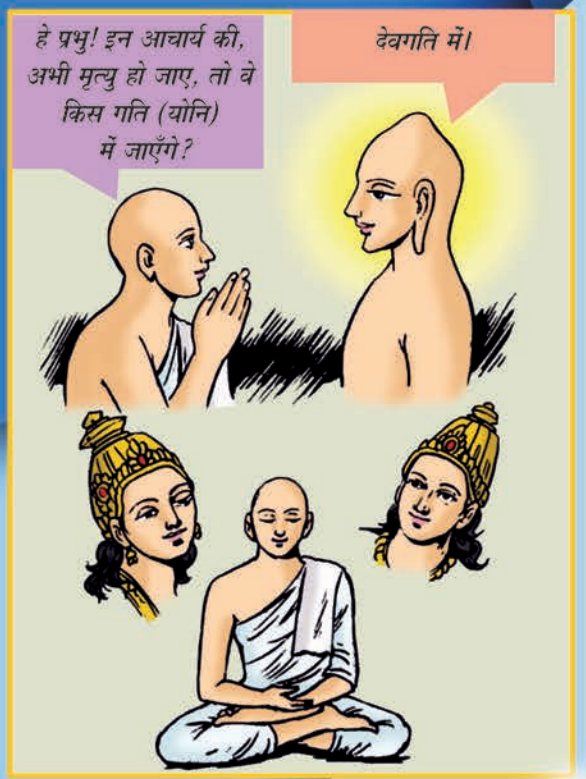
हे प्रभु! इन आचार्य की, अभी मृत्यु हो जाए, तो वे किस गति (योनि) में जाएँगे?
देवगति में।

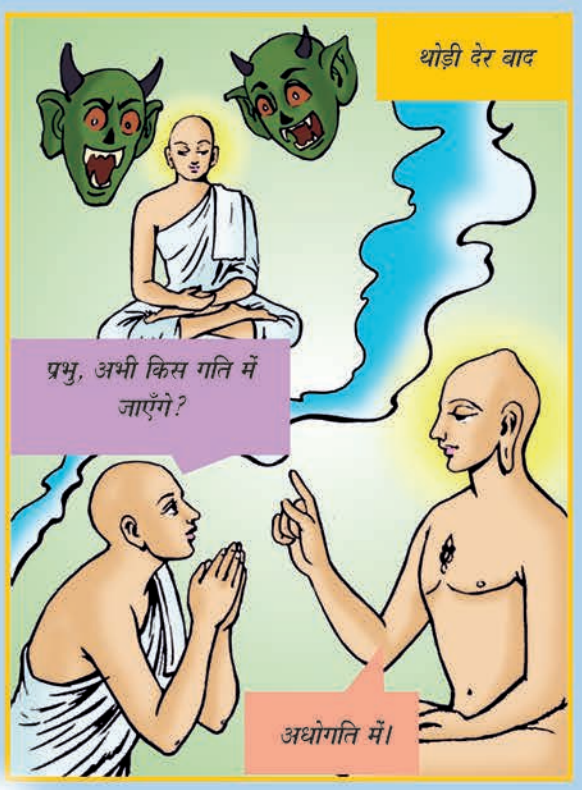
थोड़ी देर बाद
प्रभु, अभी किस गति में जाएँगे?
अधोगति में।

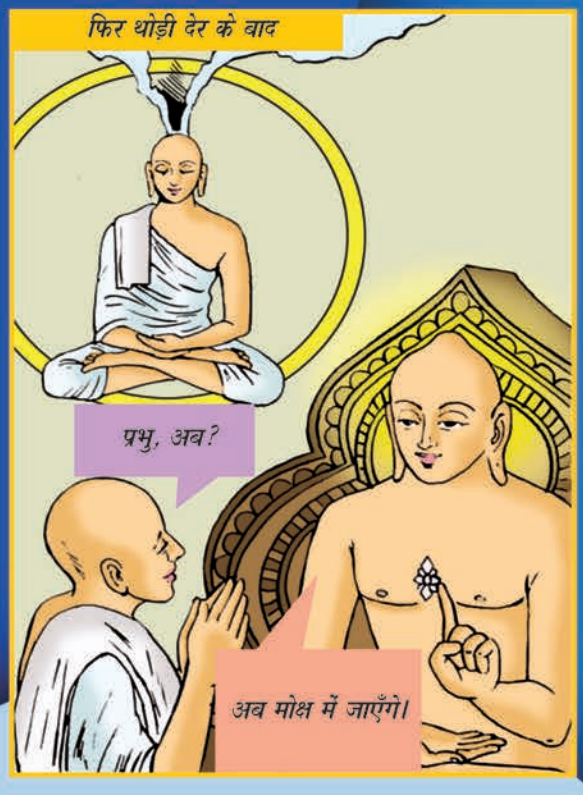
फिर थोड़ी देर के बाद
प्रभु, अब?
अब मोक्ष में जाएँगे।

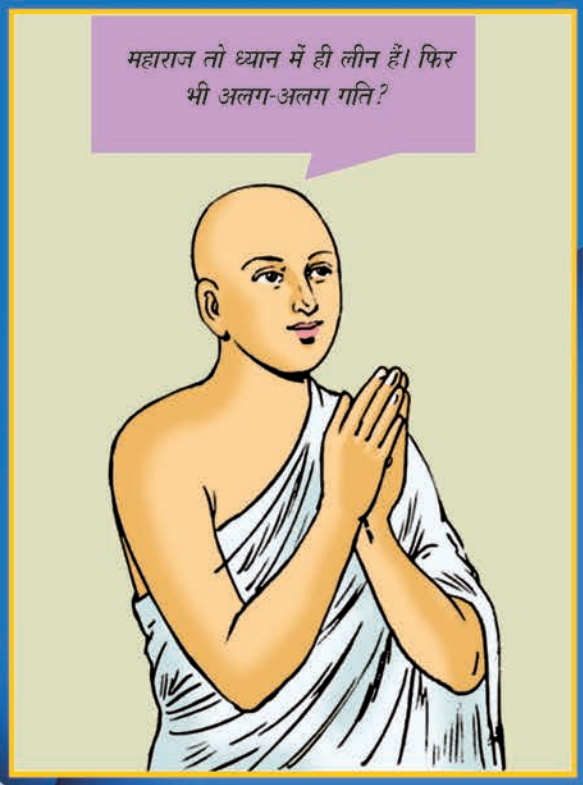
महाराज तो ध्यान में ही लीन हैं। फिर भी अलग-अलग गति?

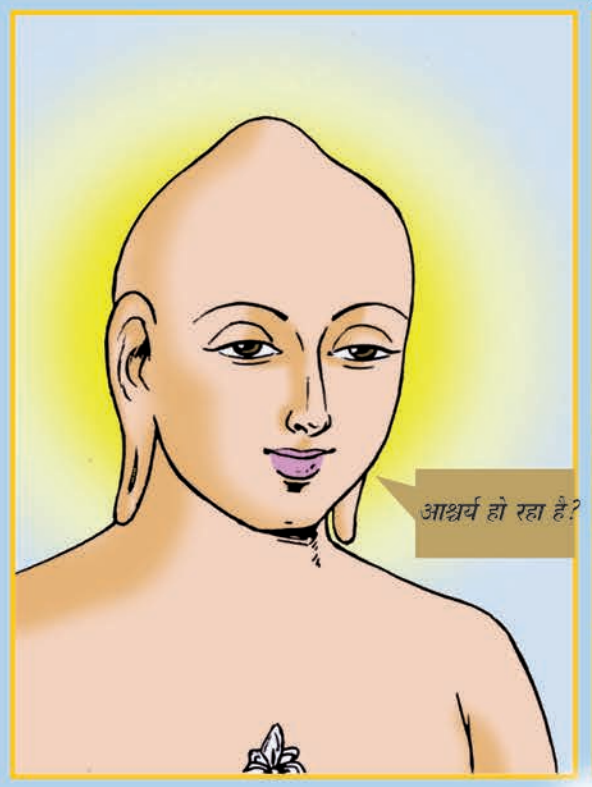
आश्चर्य हो रहा है?

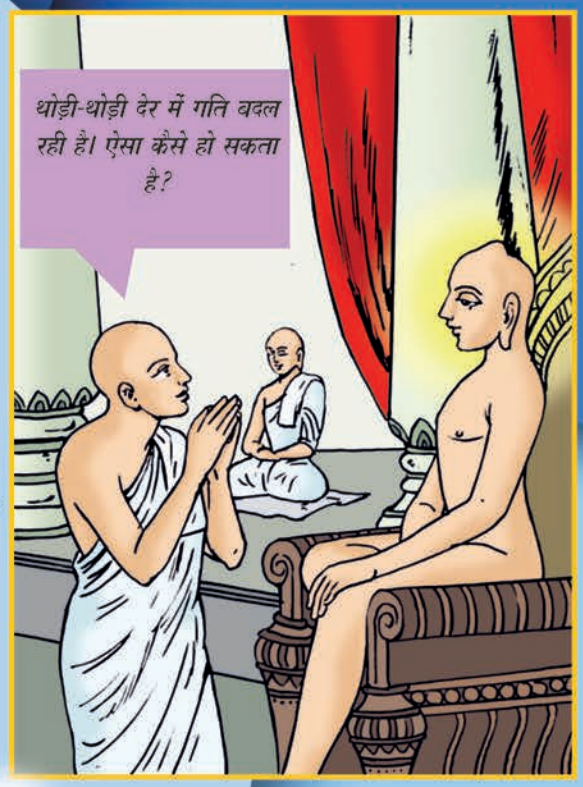
थोड़ी-थोड़ी देर में गति बदल रही है। ऐसा कैसे हो सकता है?

हमें जो दिखता है, वह आपको नहीं दिखता और आपको जो दिखता है, उसे हम नहीं देखते।

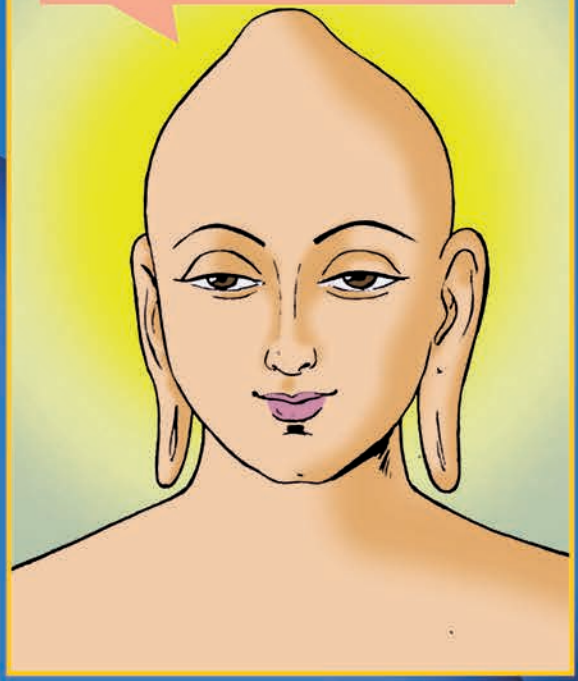

पहले आचार्य संयम मार्ग की धन्यता अनुभव कर रहे थे। अतः ऐसे में जीव छूटने पर देवगति में जाता है। इसलिए यदि उस समय पर देह छूटता तो देवगति में जाते।

अर्थात्?

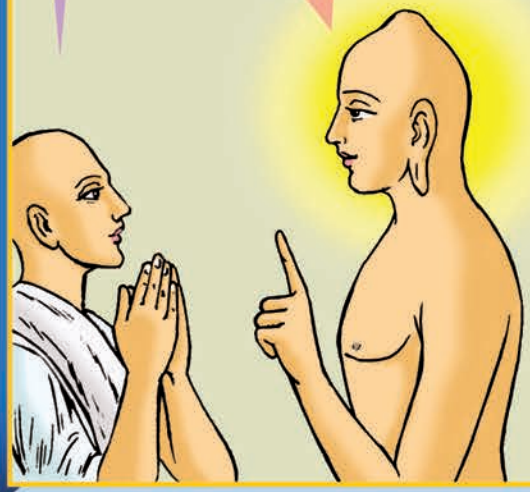

थोड़ी देर के बाद उन्हें अपने शिष्यों की भूलें याद आने लगीं और उन पर क्रोध आने लगा। अससे अधोगति होती है।

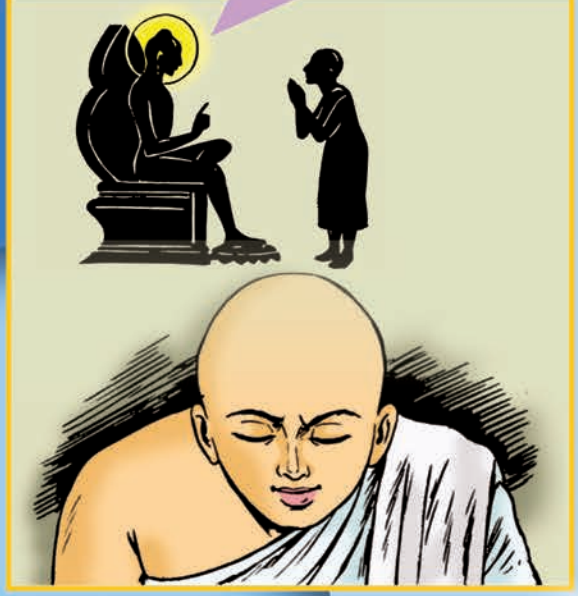

और अंत में उन्हें अपने क्रोध पर पछतावा होने लगा और फिर वे खुद आत्मा में स्थिर हो गए, उससे मोक्ष है।

यानी कि बाहर जो कर रहे उससे नहीं, पर उस समय अंदर जो चलता है, उससे अगला जन्म निश्चित होता है!

सही कहा। क्रिया से नहीं, भाव से कर्म बंधते हैं। और उसीके अनुसार गति होती है।

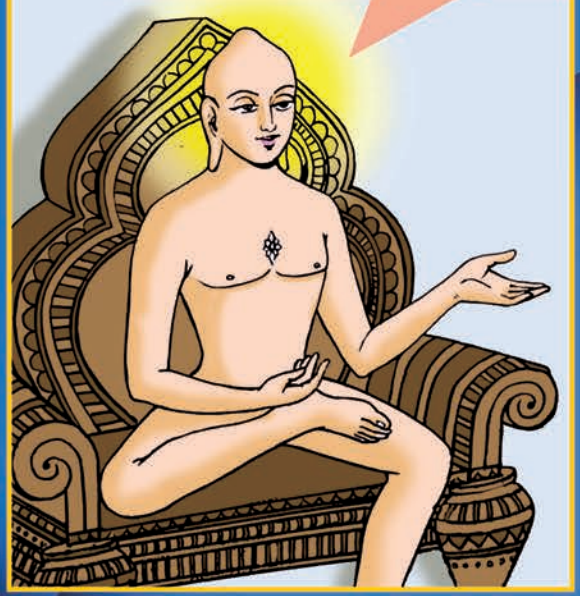

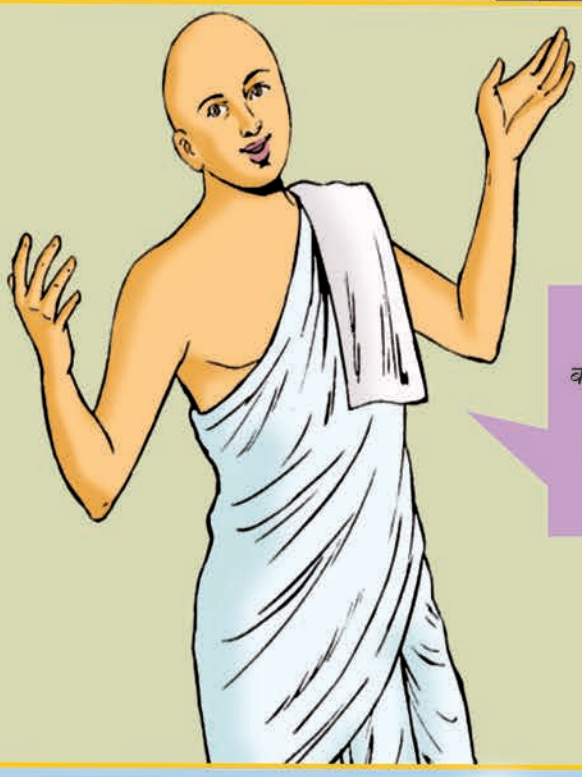

यह तो नई ही बात है!
बाहर खराब क्रिया, लेकिन अंदर अच्छे भाव - ऊँची गति
बाहर अच्छी क्रिया, लेकिन अंदर खराब भाव - अधोगति

टॉपिक:
'सुख की दुकान'

# सुख की दुकान

इसका मतलब यह हुआ कि हम जिसकी भी दुकान खोलते हैं, वह चीज़ हमें घर बैठे ही मिल जाती है।
वह तो ऐसा ही होता है न काका।
तो तू एक काम कर न! आज से सुख की दुकान खोल ले न! तो सुख भी तुझे घर बैठे ही मिल जाएगा। फिर किसी के साथ झगड़ा ही नहीं होगा।
सुख की दुकान? वह कैसे?
सुबह उठे तब से दूसरों को सुख ही देना, तू किसीको दुःख मत देना।
मैं कैसे दूसरों को सुख दे सकती हूँ? मैं तो बहुत छोटी हूँ।
तो क्या हुआ? तू बंटी को पढ़ा सकती है, उसे अपने खिलौने खेलने के लिए दे सकती है, मम्मी के घर के काम में मदद करवा सकती है, गरीबों को खाना-कपड़े आदि देना, यह सब दूसरों को सुख दिया ही कहलाता है।
ओह! यह तो बहुत आसान है।
तो कर दे शुरू। फिर देख तुझे कितना आनंद रहेगा।

इतने में तो पसीने से लथपथ एक मज़दूर वहाँ आ गया।
यह पता पढ़कर बता दो न बहन।
यह तो बिल्कुल मेरे घर के पास ही है। चलो मैं तुम्हें ले जाती हूँ।

पते पर पहुँचाकर,
काका, यह ठंडा पी लो। गर्मी में अच्छा लगेगा।
भगवान तुझे सुखी रखे बेटा।

घर आकर श्रुति अखबार लेकर बैठी।
श्रुति बहन, अखबार में क्या नई-पुरानी खबर है?
बस वही का वही। कुछ खास नहीं है।

मुझे पढ़ना-लिखना आता तो कितना अच्छा होता?
मैं तुम्हें पढ़ना-लिखना सिखाऊँगी।

श्रुति रोज मंगू बहन को एक घंटे पढ़ाती। मंगू बहन का उत्साह देखकर उसे भी बहुत आनंद आता। दिनोंदिन श्रुति का आनंद बढ़ता गया।

एक शाम जब श्रुति शंभु काका की दुकान पर पेड़े लेने गई, तभी मंगू बहन हाथ में एक काग़ज़ लेकर वहाँ आ गई।

चिट्ठी पढ़ने के बाद

श्रुति को संतोष हुआ। आज से पहले ऐसा संतोष उसे कभी नहीं हुआ था।

टॉपिक:
'अबोला'

# असली बुद्धिमान

हंसों का झुंड, वी रचना में उड़ रहा था।
जिम्मी सबसे दूर अकेला उड़ रहा था।
जिम्मी

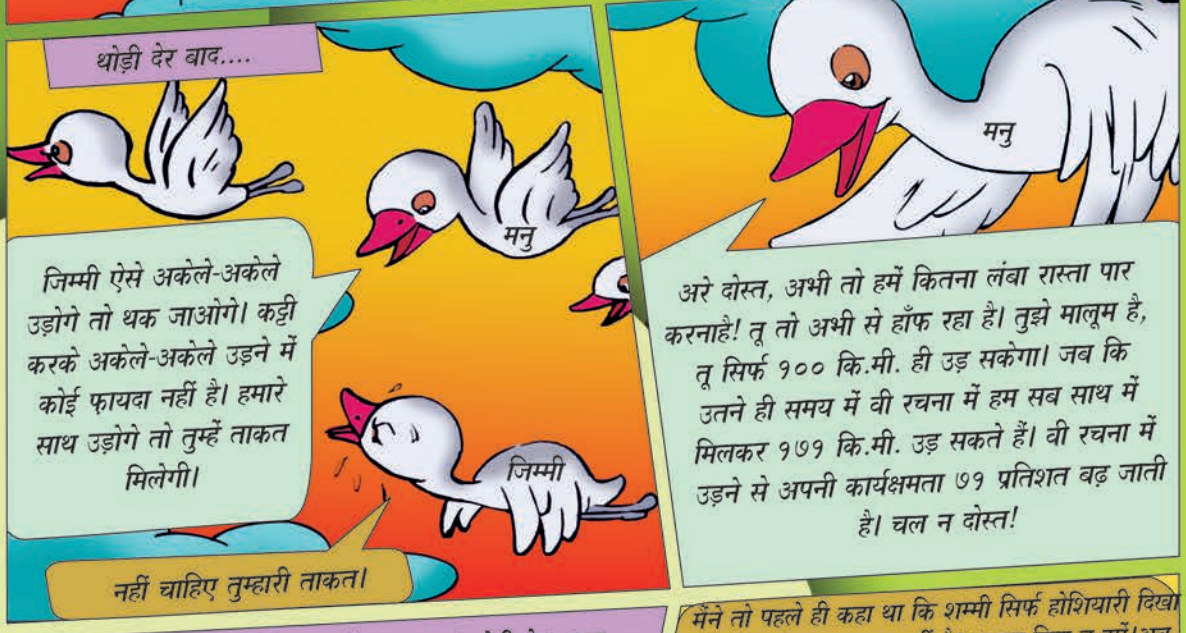
थोड़ी देर बाद....
मनु
जिम्मी ऐसे अकेले-अकेले उड़ोगे तो थक जाओगे। कट्टी करके अकेले-अकेले उड़ने में कोई फ़ायदा नहीं है। हमारे साथ उड़ोगे तो तुम्हें ताकत मिलेगी।
जिम्मी
नहीं चाहिए तुम्हारी ताकत।
मनु
अरे दोस्त, अभी तो हमें कितना लंबा रास्ता पार करनाहै! तू तो अभी से हाँफ रहा है। तुझे मालूम है, तू सिर्फ १०० कि.मी. ही उड़ सकेगा। जब कि उतने ही समय में वी रचना में हम सब साथ में मिलकर १७१ कि.मी. उड़ सकते हैं। वी रचना में उड़ने से अपनी कार्यक्षमता ७१ प्रतिशत बढ़ जाती है। चल न दोस्त!

जिम्मी मुँह बिगाड़ कर वी रचना में जुड़ गया। थोड़ी देर बाद ज़ोरदार हवा चलने लगी और तेज़ आँधी आई। शम्मी रास्ता भूल गया। उसने सभी हंसों को ज़मीन पर उतरने का इशारा किया।
मैंने तो पहले ही कहा था कि शम्मी सिर्फ होशियारी दिखा रहा है। उसे कुछ मालूम नहीं है। भटका दिया न हमें।अब तुम सब मेरे पीछे आओ।
जिम्मी
थोड़े हंस जिम्मी की बातों में आ गए। इस तरह जिम्मी ने अपनी अलग टोली बना ली।

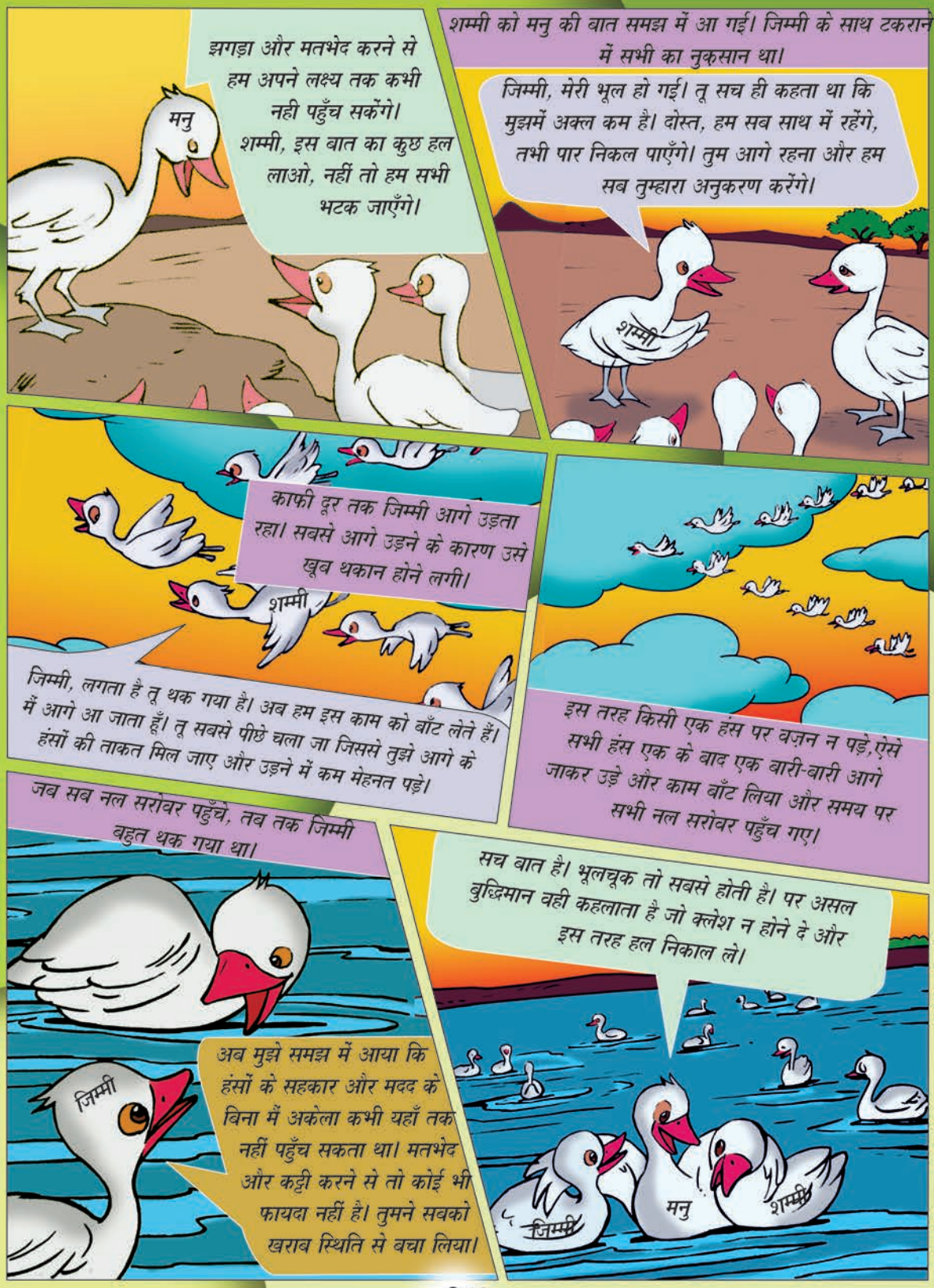

झगड़ा और मतभेद करने से हम अपने लक्ष्य तक कभी नही पहुँच सकेंगे। शम्मी, इस बात का कुछ हल लाओ, नहीं तो हम सभी भटक जाएँगे।
मनु
शम्मी को मनु की बात समझ में आ गई। जिम्मी के साथ टकराने में सभी का नुकसान था।
जिम्मी, मेरी भूल हो गई। तू सच ही कहता था कि मुझमें अक्ल कम है। दोस्त, हम सब साथ में रहेंगे, तभी पार निकल पाएँगे। तुम आगे रहना और हम सब तुम्हारा अनुकरण करेंगे।
शम्मी
काफी दूर तक जिम्मी आगे उड़ता रहा। सबसे आगे उड़ने के कारण उसे खूब थकान होने लगी।
शम्मी
जिम्मी, लगता है तू थक गया है। अब हम इस काम को बाँट लेते हैं। मैं आगे आ जाता हूँ। तू सबसे पीछे चला जा जिससे तुझे आगे के हंसों की ताकत मिल जाए और उड़ने में कम मेहनत पड़े।
इस तरह किसी एक हंस पर वज़न न पड़े,ऐसे सभी हंस एक के बाद एक बारी-बारी आगे जाकर उड़े और काम बाँट लिया और समय पर सभी नल सरोवर पहुँच गए।
जब सब नल सरोवर पहुँचे, तब तक जिम्मी बहुत थक गया था।
जिम्मी
अब मुझे समझ में आया कि हंसों के सहकार और मदद के बिना मैं अकेला कभी यहाँ तक नहीं पहुँच सकता था। मतभेद और कट्टी करने से तो कोई भी फायदा नहीं है। तुमने सबको खराब स्थिति से बचा लिया।
सच बात है। भूलचूक तो सबसे होती है। पर असल बुद्धिमान वही कहलाता है जो क्लेश न होने दे और इस तरह हल निकाल ले।
जिम्मी
मनु
शम्मी

टॉपिक: 'सिन्सियारिटी'

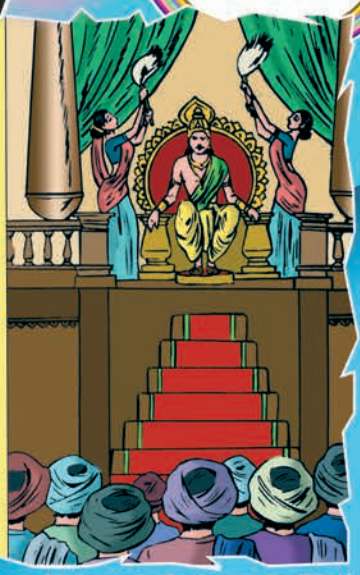

# जागे तब से सवेरा

बहन, बहुत भूखा हूँ। कुछ खाने को मिलेगा?

आओ बैठो।

खाना मिलेगा लेकिन तुम्हें मेरा एक काम करना पड़ेगा। मुझे बाहर गायों को दुहने जाना है, इस चूल्हे में रोटियाँ सेकने रखीं हैं। उनका ध्यान रखना और खास ध्यान रखना कि रोटियाँ जल न जाएँ।

हाँ, ज़रूर।

वहाँ चूल्हे के पास बैठे-बैठे राजा को झोंका आ गया। रोटियाँ सब जल गईं, झोंपड़ी में धुंआ फैल गया।

थोड़ी देर बाद

यह क्या? अरे ओ आलसी के बच्चे, उठ! यह क्या किया तूने? इतना छोटा-सा काम भी तूने ठीक से नहीं किया?

ये तो जैसा राजा वैसी उसकी प्रजा। निष्ठाहीन राजा की वजह से अभी राज्य की कैसी दयनीय स्थिति हो गई है! और आज इस कामचोर की वजह से हमें भूखा रहना पड़ेगा।

यह सुनकर राजा को आघात लगा।

पिताजी को दिया हुआ वचन मैंने निष्ठा से नहीं निभाया, उसका कैसा दुःखद् परिणाम आया! मैं मौज-शौक में अपना ध्येय ही भूल गया। कैसी भयंकर भूल हो गई मुझसे!

इतने में तो बढ़ई अंदर आया। उसने राजा को पहचान लिया।

चुप हो जा, तुझे कुछ होश है या नहीं, तू यह सब किसे बोल रही है? ये तो खुद राजा ही हैं।

हे राजा! मुझे माफ कर देना। मैंने कितनी कठोरता से आपके साथ बात की।

नहीं बहन, तूने बिल्कुल सच ही कहा। मैं तुम्हारी डाँट के लायक ही था। मैंने तुम्हें कहा था कि मैं रोटियों का ध्यान रखूँगा, लेकिन इतना भी ध्यान नहीं रख सका। काम छोटा हो या बड़ा, लेकिन एकबार जो काम करने का निर्णय किया, फिर उसे निष्ठापूर्वक करना चाहिए। इस बार तो मैं निष्फल हो गया, लेकिन अब ऐसा नहीं होगा। राजा के तौर पर मेरा जो कर्तव्य है, वह मेरा इंतज़ार कर रहा है।

टॉपिक:
शिकायत? नहीं,
"एडजस्ट"

# एडजस्टमेन्ट का प्रताप

जब शाम को बच्चे घर आए, तब मम्मी को बुख़ार था।

चिन्टू बेटा, तेरे लिए थोड़ा पौहा बनाया है, वह खा लेना।

मम्मी, मुझे भी भूख लगी है।

दिखता नहीं है कि मुझे बुख़ार आया है? चिन्टू छोटा है इसलिए उसके लिए खाना बनाया है। तू तो अब बड़ा हो गया है, खुद ही बनाना सीख जा!

हाँ मम्मी, ठीक है, आप अपना ध्यान रखिए, मैं कुछ बनाकर खा लेता हूँ।

गौरव को खाना बनाना नहीं आता था। उसने मैगी नुडल्स बनाकर खा लिए।

दूसरे दिन सुबह,

मम्मी, अब मैं खाना बनाना सीख जाऊँगा, जिससे जब कभी यदि आपकी तबियत ठीक न हो, तब मैं सबके लिए खाना बना सकूँ। हर समय थोड़ी मैगी खाई जाती है?

और ऐसे गौरव केवल बारह साल की उम्र में खाना बनाना सीख गया। इतना ही नहीं, लेकिन उसे कपड़ा धोना, प्रेस करना, बर्तन धोना...सब आ गया।

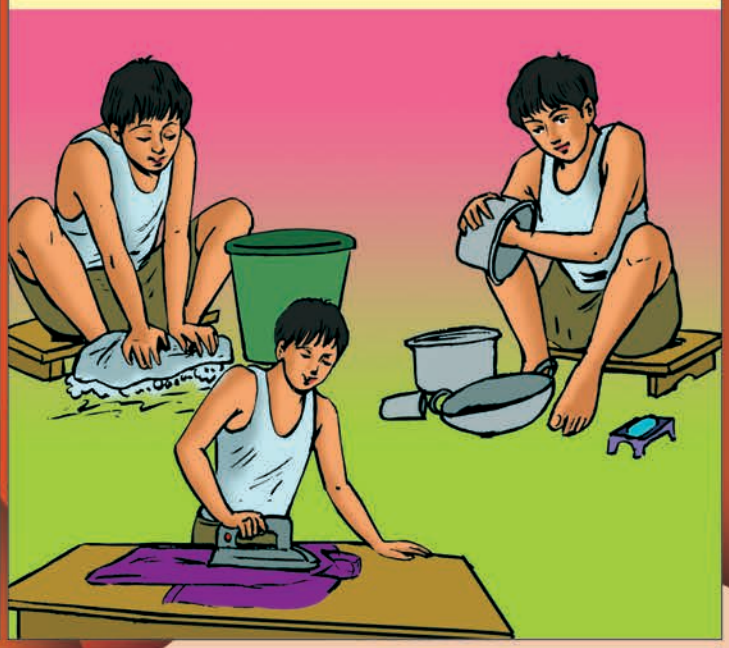

कुछ सालों के बाद गौरव और चिन्टू ने हाईस्कूल में प्रवेश किया। हाईस्कूल दूसरे शहर में होने की वजह से दोनों को बोर्डिंग स्कूल में रखा।

एक महीने के बाद,

यह स्कूल है या जेल? जेल में भी इससे अच्छा खाना मिलता होगा! दाल तो कैसी पानी जैसी है और रोटी है या क्या? मुझे यहाँ अच्छा नहीं लगता। मुझे घर जाना है।

भाई, यह खाना तो बहुत अच्छा है। तुझे मालूम है, मैं जब खिचड़ी बनाना सीख रहा था, तब इससे भी खराब बनाता था।

नहीं, यह जेल जैसा स्कूल नहीं चलेगा। कैदी से भी ज्यादा मज़दूरी करवाते हैं। अपने आप कपड़े धोना, प्रेस करना और रोज़ सुबह जल्दी उठना। मैं तो तंग आ गया हूँ। कल ही पापा को फोन करके कहता हूँ कि मुझे यहाँ से ले जाइए।

एक बात कहूँ, अनुभव से कहता हूँ। शिकायत किए बिना तू जितना एडजस्टमेन्ट लेगा उतनी ही तेरी शक्तियाँ बढ़ेंगी, कमज़ोरियाँ टूट जाएगी। फिर तुझे शिकायत नहीं रहेगी। कोशिश करके देख।

हरगिज़ नहीं, मुझे तेरी यह लेक्चरबाज़ी नहीं सुननी।

और चिन्टू ने पापा को बुला लिया।

चिन्टू, इस स्कूल की पढ़ाई करेगा तो भविष्य में तुझे बहुत फायदा होगा।

पापा के बहुत समझाने पर भी चिन्टू बोर्डिंग स्कूल में पढ़ने के लिए तैयार नहीं हुआ।

गौरव को तो बोर्डिंग स्कूल से कोई शिकायत नहीं थी। एडजस्टमेन्ट लेना उसे आ गया था। वहाँ के प्रतिकूल संयोगों को अनुकूल बनाकर वह बहुत अच्छे नंबरों से पास हुआ और लॉ कॉलेज में एडमीशन लेकर एक सफल वकील बना।

दूसरी तरफ, चिन्टू अपने घर के सिवाय दूसरी किसी भी जगह पर एडजस्ट न होने के कारण, साधारण पढ़ाई करके अपने ही शहर में एक साधारण क्लर्क के तौर पर नौकरी की।

टॉपिक :
'कॉपीकेट'

# नक़ल नहीं, असल ही चाहिए

लेकिन स्कूल में कुछ खास बच्चों से मैं बहुत प्रभावित था। स्कूल के वे 'पोप्युलर' बच्चे कहलाते थे। उनके साथ दोस्ती करने, उनके ग्रुप में शामिल होने के लिए मैं उनकी नक़ल करने लगा।

उन बच्चों ने मुझे अपनाया तो सही, लेकिन मैंने मेरा असली व्यक्तित्व खो दिया। मैं उन के जैसे कपड़े पहनने लगा। उनकी तरह और उनकी ही स्टाइल में बातें करने लगा। अरे! बोलने, चलने, खाने में सभी बातों में उनकी नक़ल होने लगी।

इतना ही नहीं, केरियर भी मैंने नक़ल करके ही पसंद किया। उन लोगों ने एम.बी.ए. करना तय किया, तो मैंने भी उनकी नक़ल करके एम.बी.ए. करने का निर्णय लिया।

लेकिन नकल करने से सफलता थोड़े ही मिलती है? जॉब पर मुझे अच्छा ही नहीं लगता था, मेरा दम घुटता था और अंत में इस जॉब से मुझे निकाल दिया।

आज अलमारी साफ करते समय यह पुराना एल्बम मिला। एल्बम देखकर लगा कि 'पहलेवाला अतीत' तो न जाने कहाँ खो गया!

दोस्त मुझे भरोसा है कि पुराना अतीत कहीं भी नहीं खोया। तुझे तेरी क़ाबिलीयत की पहचान नहीं थी, इसलिए तूने नक़ल करके अपनी शक्तियाँ खर्च कर दीं और समय बिगाड़ा। लेकिन अभी भी कुछ देर नहीं हुई है।

मतलब?

मतलब यह कि तेरे चाचाजी सच ही कहते थे। तेरी फोटोग्राफी में जादू है। बोल, सोमवार से मेरी कंपनी में काम करना है?

अतीत ने विनय की कंपनी में नौकरी ले ली और खूब सफल फोटोग्राफर बना। उसके बाद उसने अपने जीवन में और प्रोफेशन में कभी किसी की नक़ल नहीं की।

हमारा एक टेढ़, आपके तो अवरह टेढ़े
पंचिक : 'दूसरों की भूल निकालने की बुरी आदत'
एक दिन ऊँट भाई ताज़ी हवा में व्यायाम करने लगे। तभी बंदर ने पेड़ पर छलांगें मारनी शुरू कर दीं।
अरे बंदर, यह तू क्या पूरे दिन उछल-कूद करता रहता है? लाइफ में थोड़ा सीरियस बन।
आप अपना व्यायाम करो। मैं मेरा व्यायाम कर रहा हूँ।
शरारती ! कुछ आता तो है नहीं, बस पूरे दिन धमाल, धमाल और धमाल!
बंदर से परेशान होकर ऊँट आगे चलने लगा। वहाँ उसे सियार, बगुला और खरगोश दिखे। वे किसी काम में मग्न थे।
एय सियार! क्या कर रहा है?
क्या कहा?
बहरा है? इतने लंबे कान हैं, मगर सुनाई तो देता नहीं है।
देखता नहीं, मैं नाव बना रहा हूँ।
नाव किसलिए?
नदी के उस पार एक हरा-भरा जंगल है। वहाँ जाने के लिए नाव बना रहे हैं।

मैं भी आपकी मदद करता हूँ। मुझे भी साथ में ले जाओ न!

नाव बनाते हुए।

ए्य बगुले, तेरी टेढ़ी गर्दन की तरह तेरी नज़र भी टेढ़ी ही है। सीधा बाँधना नहीं आता? मुझे करने दे।

बगुले को दुःख हुआ, लेकिन वह कुछ बोला नहीं। नाव बन गई इसलिए बगुला, खरगोश, सियार और ऊँट नाव में बैठकर नदी के उस पार जाने के लिए निकल पड़े।

पतवार चलाते-चलाते....

मैंने सुना है कि इस जंगल में तरह-तरह के फल-फूल हैं। तोता कहता था कि वहाँ रसदार खजूर हैं।

खजूर? मतलब क्या?

लो, इतना भी नहीं मालूम? तू तो मूर्खों का सरदार ही है। तेरी यह आधी ज़िंदगी बेकार गई।

तभी नाव में कुछ कडडडडड आवाज़ आई,
ऊँटभाई, आप तो बहुत होशियार हो। सबकुछ सीख लिया है। तैरना तो सीखा ही होगा न?
नहीं, क्यों?
तब तो तुम्हारी पूरी ज़िंदगी बेकार गई। क्योंकि अपनी नाव डूब रही है। हम तो तैरकर उसपार चले जाएँगे। आप क्या करोगे?
हर वक्त सभी लोगों की भूलें ही निकालते रहते हो। तोता की चोंच टेढ़ी, कुत्ते की दुम टेढ़ी, मेरी गर्दन टेढ़ी.....
अरे, हमारा तो एक टेढ़ा, आपके तो अठारह अंग टेढ़े हैं!
नाव टूट गई। किनारा बिल्कुल नज़दीक था। लेकिन ऊँट को तो बिल्कुल भी तैरना नहीं आता था। डूबते हुए, ऊँट को समझ आई कि दूसरे की गलती निकालना भयंकर भूल है। बगुला, सियार और खरगोश जंगल में से एक मोटी डाली ढूँढकर ले आए। डाली नदी में फेंकी, ऊँट को किनारे पर खींचकर बचा लिया। उस दिन से जब भी ऊँट किसी की भूल निकालता, तो उसे ऐसा लगता जैसे वह डूब रहा हो। और तुरंत ही माफी माँगकर, भूल सुधार लेता।

टॉपिक:
'आड़ाई सरलता'

# आड़ाई से रह गया...

पर मालव टस से मस नहीं हुआ।
मालव, जिद करके सबका मूड क्यों बिगाड़ रहा है? ऐसा करने में तुझे मज़ा आता है? मान जा न!
ठीक है मालव, अभी तू बैठ, मैं बाद में बैठूँगा।
नहीं, दोनों बार मैं ही बैठूँगा। वर्ना मुझे नहीं आना।
तो तू यहीं रह। हम जा रहे हैं।
कुछ बोले बिना मालव घर आ गया और सोफे पर बैठ गया। कार के जाने की आवाज़ पर मालव ने ध्यान नहीं दिया। उसने फोन लेकर तीन-चार दोस्तोंको घुमाया लेकिन कोई नहीं मिला।
थोड़ी देर बाद उसने अपनी फेवरिट म्यूजिक की सी.डी. लगाई। पर म्यूजिक में उसे मज़ा नहीं आया। उसे खूब बैचेनी हो रही थी।
वे लोग ज़ू में कैसे मज़े कर रहे होंगे?

टाइम पास करने के लिए मालव ने बुक्स, गेम्स, टी.वी. सब आज़मा लिया, लेकिन कहीं भी उसका चित्त नहीं लगा।

रात के नौ बजे मालव को दर्श और काव्या के हँसने की आवाज़ सुनाई दी। जू की बातें करते-करते उन्होंने दरवाज़ा खोला। फटाफट मालव ने एक कॉमिक बुक हाथ में ली और पढ़ने का ढोंग करने लगा।

.दूसरे दिन सुबह नाश्ता करते-करते भी दर्श और काव्या जू की बातें कर रहे थे।

मालव ध्यान से उनकी बातें सुन रहा था, लेकिन दिखावा ऐसा कर रहा था जैसे उसे बिल्कुल रुचि न हो।

मालूम है, बंदर के रखवाले ने मुझसे एक बात कही। जंगल में से बंदर को पकड़ने के लिए वे एक बॉक्स में, बंदर का हाथ जाए उतना छोटा छेद करके वहाँ एक केला लटकाते हैं। बंदर केला लेने के लिए हाथ अंदर डालता है। पर केला हाथ में पकड़ने से मुट्ठी बन जातीं है, इसलिए छेद में से हाथ बाहर नहीं निकाल सकता और पकड़ा जाता है। अब छूटने के लिए उसे एक छोटा-सा केला ही छोड़ना होता है, पर जिद्दी बंदर इतनी छोटी सी चीज़ नहीं छोड़ सकते और पकड़े जाते हैं।

बंदर कितने पागल होते हैं!

दर्श की बात सुनकर मालव को भी हँसी आ गई।

मैंने भी तो बंदरों जैसा ही काम किया न! आगे की सीट पर बैठने के लिए जिद की। बारी-बारी से बैठनेवाली पापा की बात नहीं सुनी और मनमानी करके आड़ाई की। अंत में बंदर की तरह सारे दिन घर में बंद बैठा रहा और जू का मज़ा गँवाया।

मालव को अपनी भूल समझ में आई।

टॉपिक : 'गुरुकृपा'
गुरु का विनय
पुराने समय की बात है। उस समय विद्यार्थी गुरुकुल में पढ़ते थे। गुरुजी के पास रहकर सभी विद्याएँ प्राप्त करते थे।
गुरुजी, आज परीक्षा में राघव नकल कर रहा था।
अच्छा, मैं पता लगाऊँगा।
थोड़े दिन बाद,
गुरुजी, आज मैंने राघव को पड़ोसी के बाग में से फल चोरी करते देखा।
अच्छा महिपाल, मैं उसे उचित दंड दूँगा। लेकिन बेटा, तू तेरी पढ़ाई पर ध्यान रख। कल की गणित की परीक्षा की पूरी तैयारी हो गई है न?
परीक्षा का परिणाम बताते हुए,
महिपाल, तुमसे मुझे यह आशा नहीं थी। गणित में तुम्हारी कुशलता पर मुझे ज़रा भी संशय नहीं था। लेकिन तुम्हारें उत्तर देखकर मुझे बहुत निराशा हुई है। कल ये सभी पहाड़े सौ बार लिखकर लाना।
कुटीर में
गुरुजी कितने पक्षपाती हैं! मेरी इतनी छोटी-सी भूल के लिए मुझे कितनी बड़ी सज़ा दे दी! और वह राघव कितना बड़ा अपराध कर रहा है! धनवान होते हुए भी चोरियाँ करता है। उसे गुरुजी कुछ भी नहीं कहते। ज़रूर राघव के पिताजी से उन्हें भेंट-सौग़ात मिलतीं होगीं। इसलिए चुप रहते हैं।
महिपाल, गुरुजी के लिए ऐसे शब्द मत बोल। शायद कभी हमें गुरुजी का आशय समझ में नहीं भी आए, लेकिन इस वजह से उनका अविनय नहीं करना चाहिए। उनका अविनय करोगे तो उनसे विद्या कैसे ग्रहण करोगे?
अच्छा, अच्छा, तुझे जब सज़ा होगी तब ये बड़ी-बड़ी बातें याद कराऊँगा।

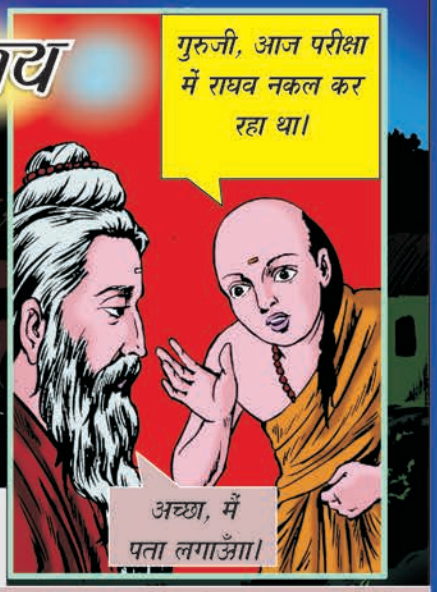

दूसरे दिन महिपाल ने राघव को फिर से चोरी करते देखा। उसे बहुत बेचैनी हुई।

गुरुजी, राघव का ऐसा वर्तन हमसे सहन नहीं होता। आज ही उसे गुरुकुल से बहार निकालिए।

महिपाल तू तो कितना समझदार है कि तुझे अच्छे-बुरे की समझ आ गई है। तू तो कहीं भी जाकर पढ़ सकता है। लेकिन राघव को तो अभी अच्छे-बुरे का भेद भी समझ में नहीं आया और मुझे यही सिखाना है।

यह सुनकर महिपाल एकदम चुप हो गया। श्यामल की बात उसे याद आई और गुरुजी का आशय भी उसे समझ में आया।

थोड़े दिन बाद,

श्यामल, यह क्या लिखा है? व्याकरण में ऐसी गलतियाँ नहीं चलेगी। यह पाठ कल पाँच बार लिखकर लाना।

कुटीर में आकर श्यामल ने गुरुजी की दी हुई सज़ा खूब ध्यानपूर्वक पूरी की। दूसरे दिन गुरुजी ने फिर से उसे अन्य विषय के लिए सज़ा दी और ऐसे बहुत दिनों तक चला। किसी न किसी कारण से श्यामल को सज़ा मिलती और श्यामल गुरु के प्रति थोड़ा-सा भी विनय चूके बिना, उनकी कही हुई बात ध्यानपूर्वक करता।

एक शाम को श्यामल कुटीर में बैठकर सज़ा के तौर पर गुरुजी द्वारा दिया हुआ गृहकार्य पूरा कर रहा था।

श्यामल, गुरुजी तुझे इतनी सज़ा देते हैं, फिर भी तुझे उनके प्रति कोई नकारात्मक भाव नहीं होता। मैं तो कितनी छोटी-सी बात के लिए चिढ़ गया था। तूने अंदर कौन-सी समझ सेट की है कि जिससे तुझे उनके प्रति बिल्कुल भी अविनय नहीं होता?

थोड़ा सोचकर,

मेरे पिताजी लुहार हैं। उनकी दुकान में लोहा आता है और उस लोहे से वे छुरियाँ बनाते हैं। लेकिन क्या तुझे मालूम है कि छुरी बनाने की प्रकिया क्या होती है?

नहीं।

जब तक लोहा लाल-लाल न हो जाए, तब तक पिताजी उसे गरम करते हैं। फिर बहुत ज़ोर से हथोड़े से लोहे को पीटकर उसे आकार देते हैं और फिर ठंडे पानी में उस लोहे को डाल देते हैं। पूरी दुकान भाप से भर जाती है और ऐसी प्रकिया वे बहुत बार करते हैं।

महिपाल को उसके प्रश्न का जवाब तो नहीं मिला था, लेकिन फिर भी वह रुचिपूर्वक सुन रहा था।

कई बार लोहा यह पद्धति सहन नहीं कर सकता और टूट जाता है। पिताजी उस लोहे को कबाड़े में फेंक देते हैं।

थोड़ी देर रुककर, श्यामल ने महिपाल के मुख्य प्रश्न का जवाब दिया।

जैसे पिताजी लोहे को मारकर उसे आकार देते हैं, वैसे ही गुरुजी भी मुझे गढ़ रहे हैं। जब गुरुजी मुझे सज़ा देते हैं, तब मैं अंदर ऐसा ही सोचता हूँ कि गुरुजी मेरे हित के लिए ही कर रहे हैं तो फिर मैं उनका अनादर या अविनय कैसे कर सकता हूँ?

यह सुनकर महिपाल बहुत प्रभावित हो गया।

बिल्कुल सही बात है। मेरे अविनय से मैं तो उस कबाड़े के लोहे की तरह फेंक दिया गया होता, पर यह बात बताकर तूने मुझे बचा लिया।

मुस्कुराते हुए, श्यामल फिर अपने काम में लग गया।

फर्ज़
ટૉપિક :
'ચલો બોરિયત'
राजघराने में जन्मे कुंवर प्रतापसिंह को बचपन से ही खूब ऐशो-आराम थे। एक चीज़ माँगें और दस हाज़िर हो जातीं। फिर भी वे सुखी नहीं थे। किसी भी वस्तु या प्रवृत्ति से वे थोड़े ही समय में बोर हो जाते थे।
राजा को अपने कुंवर की बहुत फिक्र रहती थी।
ऐसे कुंवर को राजगद्दी कैसे सोपूँगा, जिसे अपनी ज़िम्मेदारियाँ निभाने में नीरसता रहती है, राज्य का काम करने में बिल्कुल भी मन नहीं लगता। मेरे जाने के बाद इस राज्य का क्या होगा?
बहुत समझाने पर भी, कुंवर प्रतापसिंह को अपने फर्ज़ों के प्रति नीरसता ही रहती। फर्ज़ निभाते समय बहाने बनाकर निकल जाते थे।
मंत्रीजी, गोमतीपुर के राजा के साथ मेरी कल की सभा आप सँभाल लेना।
कुंवर, आपके पिताजी नाराज़ हो जाएँगे। उन राजा का अपने राज्य पर बहुत उपकार है। मुश्किल के समय उन्होंने हमारी बहुत मदद की थी। आपको उनसे मिलना चाहिए।
नहीं, लेकिन मुझे वह राजा ज़रा भी पसंद नहीं हैं। और वार्तालाप करने में मुझे बहुत बोरियत होती है। सच कहूँ तो यह सब मुझे आता भी नहीं है।

कुंवर और मंत्री के बीच में प्रेम का संबंध था। मंत्रीजी ने बचपन से ही कुंवर की देखभाल की थी।

कुंवर, बातचीत किए बिना हम उनके राज्य में से माल-सामान का आयात कैसे कर पाएँगे? आप, यदि अपने इस अनिवार्य काम को "प्रिय" बना दें, तो फिर काम करने की शक्ति भी आपको ज़रूर मिल जाएगी। बस, आप इस काम में रूचि लें, आपको ज़रूर यह काम अच्छा लगने लगेगा।

लेकिन, मुझे यह सब काम अच्छे नहीं लगते। ऐसा फर्ज़ मुझे कबूल नहीं हैं। राज्य की देखरेख तो पिताजी कर ही रहे हैं, और मदद के लिए आप साथ में हो ही।

मंत्रीजी, आज दोपहर को आप वेश बदलकर, राज्य में प्रजा सुख-शांति में है या नहीं उसकी खबर लेने जाना। साथ में कुंवर को भी ले जाना।

जैसी आपकी आज्ञा, महाराज।

मंत्रीजी ने सेठ का वेश पहना और कुंवर ने सेठ के बेटे का वेश पहना। महल में से बाहर निकलते ही उन्होंने कुछ मज़दूरों और कारीगरों को देखा।

ज़ोर लगा के .....हाइशा.....

भैया, कामकाज कैसा चल रहा है?

राजा की मेहरबानी से सब अच्छा चल रहा है।

इतना कठिन काम कर रहे हैं, फिर भी इनके चेहरे पर बिल्कुल भी बोरियत नहीं है? कैसे आनंद में दिख रहे हैं, सभी! यह कैसे संभव है?

थोड़ा आगे जाने पर,

पूड़ी तलने में कैसा मज़ा, भई कैसा मज़ा!

धंधा-पानी सब कैसा चल रहा है, भैया?

राजा की कृपा से सब कुशल मंगल है।

यह आदमी पसीने से लथपथ है, फिर भी ऐसे मुश्किल काम में मज़ा मानता है! ऐसा कैसे हो सकता है?

भैया, इतनी गर्मी में तुम्हें इस गरम तेल के पास काम करना अच्छा लगता है? बोर नहीं हो जाते?

अरे, इसमें बोरियत कैसी? यह तो मेरी रोज़ी रोटी है। फर्ज़ है। ऐसे भी, राज़ी-खुशी से करूँ या चिढ़कर करूँ, लेकिन किए बिना चारा ही नहीं, करना ही है। तो फिर खुशी से क्यों न करूँ?

कैसी समझदार है यह प्रजा! कैसी राज़ी-खुशी से इतनी कठिनाईयों में भी अपने सभी फर्ज़ निभाते हैं। पिताजी भी अपनी फर्ज़ कितने सुंदर ढंग से निभा रहे हैं, जिसके कारण उनकी प्रजा उनसे इतनी संतुष्ट हैं। मेरे पास तो सभी सुख और सुविधाएँ हैं। किसी भी काम में मेरा चित्त नहीं लगता इसलिए बोरियत होती है और दुःखी रहता हूँ। यदि मैं भी अपना काम मन लगाकर करूँगा तो कितने आनंद में रह सकूँगा!

महल लौटते वक्त,

"मंत्रीजी, गोमतीपुर के राजा के साथ की सभा कितने बज़े हैं?"

मंत्रीजी धीरे से मुस्कुराए।

थीमिक :
'निश्चय की शक्ति'

# निश्चय की शक्ति

रविवार की सुबह थी। दादाजी बालकनी में झूले पर बैठकर, अखबार और गरमा गरम चाय के साथ सुबह का मज़ा ले रहे थे।

दादाजी प्लीज़ मुझे अखबार के बीच का पन्ना दीजिए न।

दादाजी के पास बैठकर अमन बड़े रुचि से कुछ पढ़ने लगा।

ओह नो! गए काम से!

क्या हो गया?

मेरा भविष्य पढ़ रहा हूँ। बुधवार का भविष्य तो बिल्कुल बकवास है। बुधवार को मेरा साइन्स का टेस्ट है। इस बार फिर टेस्ट में गड़बड़ होगी।

तुझे साइन्स के टेस्ट में अच्छे मार्क्स लाने हैं?

लाने तो हैं। पर अब कोई चान्स नहीं दिखता है।

यह भविष्यवाणी तेरा रिज़ल्ट नहीं तय करती। "अच्छे मार्क्स लाने ही हैं", ऐसा यदि तू पक्का निश्चय करेगा तो तुझे कोई नहीं रोक सकता। यह भविष्यवाणी भी नहीं।

मैं ट्राई तो करूँगा, लेकिन पता नहीं, ठीक से पढ़ पाऊँगा या नहीं। यह पढ़कर तो मेरा मूड ही खराब हो गया।

हो पाएगा या नही ऐसा सोचेगा तो सच में सब बिगड़ ही जाएगा। "होगा ही, क्यों नहीं होगा", ऐसा पक्का निश्चय करेगा तो अच्छे मार्क्स आएँगे ही। तू निश्चय कर कि मुझे यह करना ही है। तो सब हो सकेगा।

मैं तुझे एक कहानी सुनाता हूँ। यह कहानी है महर्षि पाणिनी की। उन्होंने संस्कृत व्याकरण का महान ग्रंथ -'अष्टाध्यायी' लिखा था। संस्कृत भाषा का पूरा व्याकरण उन्होंने इस छोटी सी पुस्तक में डाल दिया। कितने बुद्धिशाली होंगे!

तुझे यह जानकर आश्चर्य होगा कि संस्कृत के ऐसे पंडित की बुद्धि बचपन में ज़रा-सी भी विकसित नहीं थी। कक्षा में गुरुजी जो पढ़ाते, वह उनके दिमाग में बैठता ही नहीं था।

इसलिए सभी सहाध्यायी 'मूर्ख का सरदार' कहकर उनका मज़ाक उड़ाते रहते थे।

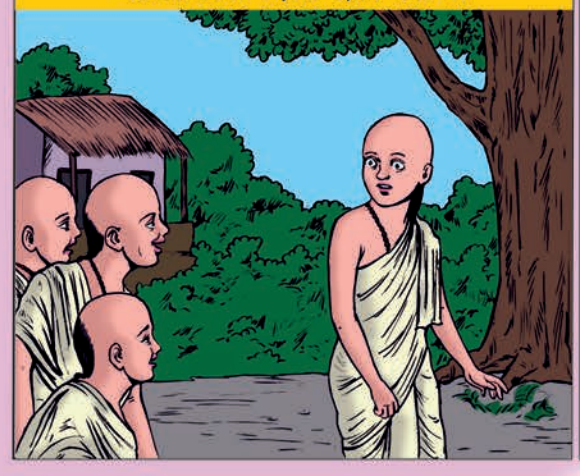

एक दिन,

पाणिनी, इस प्रश्न का जवाब दो।

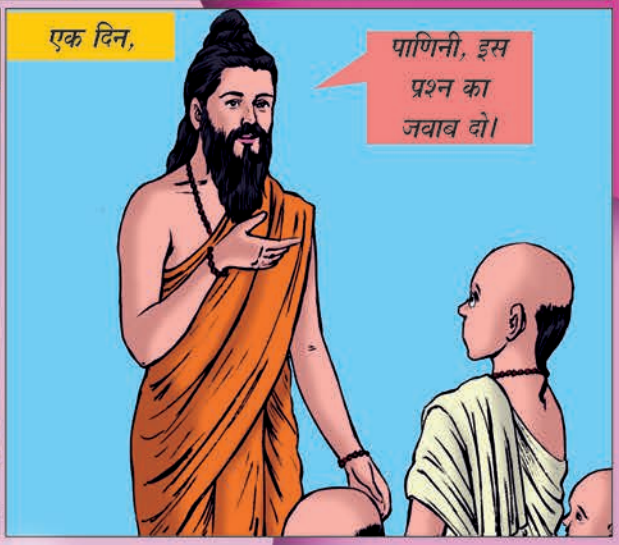

पाणिनी गुरुजी के सामने देखते ही रहे। गुरुजी को खूब गुस्सा आया।

तेरी हथेली मेरे सामने रख।

पाणिनी काँपने लगे। डरते हुए उन्होंने मुट्ठी खोलकर हथेली गुरुजी के सामने रखी! गुरुजी हथेली पर छड़ी से मारने ही जा रहे थे, कि उनकी नज़र हथेली पर पड़ी और वे चौंक गए। छड़ी उनके हाथ में ही रुक गई।

जा बेटा, तेरी जगह पर जाकर बैठ जा।

गुरुजी क्या हुआ?

अरे, तुझे विद्या कैसे आए? तेरे हाथ में तो विद्या की रेखा है ही नहीं!

गुरुजी के इन शब्दों से छोटे से बालक के हृदय पर बहुत बड़ा आघात लगा।

गुरुजी, आपका हाथ बताइए न? विद्या की रेखा कहाँ होती है? यह तो बताओ।

गुरुजी ने अपनी हथेली खोली और उसमें विद्या की रेखा उसे बताई।

उस रात उसने एक धारदार पत्थर से अपने कोमल हाथ पर एक रेखा बना दी। वह विद्या की रेखा थी। उसकी हथेली खून से लथपथ हो गई।

अब तो मेरे हाथ में विद्या की रेखा है। अब मुझे सब आने लगेगा।

दूसरे दिन

गुरुजी, देखिए मैंने मेरी हथेली पर विद्या की रेखा खींच ली है। अब विद्या प्राप्त करने में मुझे कोई नहीं रोक सकता।

अरे बेटा, यह तूने क्या किया? परंतु अब, सचमुच विद्या प्राप्त करने से तुझे कोई नहीं रोक सकता।

समय के साथ सफेद रेखा अदृश्य हो गई और उनका हाथ पहले जैसा ही हो गया। परंतु उनके हृदय में दृढ निश्चय की जो रेखा खींची थी वह तो समय के साथ और भी अधिक गहरी होती गई। जब तक वह अपना पाठ ठीक से न समझ लें, तब तक खाना-पीना सोना सब बंद हो जाता। ध्येय प्राप्ति के लिए, उनके ऐसे दृढ निश्चय के कारण, एक समय 'मूर्ख का सरदार' कहलानेवाला संस्कृत भाषा का महान व्याकरण शास्त्री बन गया।

अब तू ही बता, यदि पाणिनी हाथ की रेखा के सहारे बैठे रहते, तो क्या वे अपने ध्येय तक पहुँच सकते थे?

नहीं।

तभी पापा बालकनी में आए।

तो अमनसेठ, तुम्हारा भविष्य क्या कह रहा है?

मेरा भविष्य तो भयंकर है। पर मैं अपने निश्चय बल से उसे सुंदर बना दूँगा।

क्या?

यह सुनकर, दादाजी धीरे से हँसे और फिर चश्मा पहनकर अखबार पढ़ने लगे।

टॉपिक :
'प्रार्थना पहुँचे परमात्मा को'
अंदर बैठे हुए भगवान से प्रार्थना
दीप लेटे-लेटे कुछ सोच रहा था। उसने इतनी ज़ोर से मुट्ठी में बोल पकड़ी कि वह हाथ से निकलकर नीचे ज़मीन पर गिर गई।
मम्मी, डैडी।
दीप, ये तीसरी बार तूने आवाज़ लगाई। क्या है अब?
मेरी बोल नीचे गिर गई है। डैडी, आप थोड़ी देर मेरे साथ बैठोगे? मुझे अकेले डर लग रहा है।
कैसा डर?
मेरी क्लास के दो गुंडों का, पुनीत और साकेत का! वे लोग रोज़ मेरा मज़ाक उड़ाते हैं। आज मैंने टीचर से उनकी शिकायत की। उनको सज़ा भी हुई, लेकिन जाते-जाते उन्होंने मुझे धमकी दी कि वे लोग मुझे देख लेंगे।
दीप, कई बार लोगों को दूसरों को दुःख देने के परिणाम का अंदाज़ ही नहीं होता, लेकिन उन्हें सुधारने का एक ही रास्ता है। उनके लिए प्रार्थना करना।
प्रार्थना, और इन गुंडों के लिए?

हाँ, तुझे पुनीत और साकेत के भीतर बैठे हुए भगवान से प्रार्थना करनी है कि उनको सद्बुद्धि मिले। बस, इतना ही करेगा तो धीरे-धीरे वे लोग सुधर जाएँगे और तुझे परेशान भी नहीं करेंगे।
सच?
दूसरे दिन रिसेस में........
अरे वाह! चश्मिश आज अपने लिए मज़ेदार लज्जतदार सैन्डविच लाया है! चल इसका मज़ेदार सैन्डविच खाकर इसे अच्छा मज़ा चखाते हैं।
दीप की आँखों से टप टप आँसू गिरने लगे। उसे उन लोगों पर बहुत गुस्सा आया। इतने में उसका दोस्त पावन वहाँ आया......
रो मत, चल हम टीचर से कहते हैं।
दीप को अचानक उसके डैडी के शब्द याद आए....
यदि तुम उनके प्रति द्वेष रखोगे, तो तुम्हें जलन होगी और वे लोग भी तुम्हारे साथ बैर बाँधेंगे। उसके बदले यदि तुम उनके लिए प्रार्थना करोगे, तो तुम्हें शांति मिलेगी और वे लोग भी सुधरेंगे।
नहीं, मुझे शिकायत नहीं करनी।
डरपोक...हा...हा...हा...

पूरी रिसेस, दीप ने, पुनीत और साकेत के भीतर बैठे हुए भगवान से प्रार्थना की।

हे प्रभु, पुनीत और साकेत को सद्‌बुद्धि दीजिए, उन पर कृपा कीजिए। वे किसी को भी दुःख न दें ऐसी शक्ति दीजिए।

रिसेस के बाद,

आज तो तुझे छोड़ देते हैं, पर खबरदार अब कभी हमारी शिकायत की तो!

प्रार्थना करने के बाद दीप को अंतर में बहुत शांति लगी। फिर तो जब कभी उसे पुनीत और साकेत का डर लगता तब वह अंदर से उनके लिए प्रार्थना शुरू कर देता। एक रात,

पापा, प्रार्थना का उपाय तो सच में ज़ोरदार है! अब तो पुनीत और साकेत मुझे बिल्कुल परेशान नहीं करते।

हाँ, प्रार्थना से तुझे भी खूब शक्ति मिलेगी। तू भी रोज़ भगवान से ऐसी शक्ति माँगना कि मेरे मन-वचन-काया से किसी को दुःख न हो।

एक दिन रिसेस में.....

क्या हुआ चश्मिश? आज लंच बॉक्स नहीं लाया?

नहीं, जल्दी में भूल गया।

चल, आज तू हमारे साथ लंच कर! मज़ा आएगा।

दीप, पुनीत के सामने मुस्कुराया। आज उसे प्रार्थना के पावर पर स्ट्रोंग श्रद्धा बैठ गई।

# जैसी चिंतना करोगे वैसे हो जाओगे

युवक के लिए लिखा -

तुम बेकार ही शंका कर रहे हो। तुम्हें नाखून में भी रोग नहीं है। आराम से खा-पीकर मज़े करो। कुछ भी चिंता करने जैसा है ही नहीं, आनंद में रहना।

एक आदमी से चिट्ठीयाँ भिजवाई। उस आदमी ने चिट्ठी देने में भूल कर दी। बूढ़े बाबा की चिट्ठी युवक को दी और युवक की चिट्ठी बूढ़े बाबा को दे दी।

बाबा चिट्ठी पढ़कर खुश हो गए।

ओह! बहुत अच्छा, मैं तो एकदम तंदुरुस्त हूँ।

वे बाज़ार में गए और आराम से गाँठिया और चाय नाश्ता किया और दूसरे दिन से वे घूमने फिरने लगे।

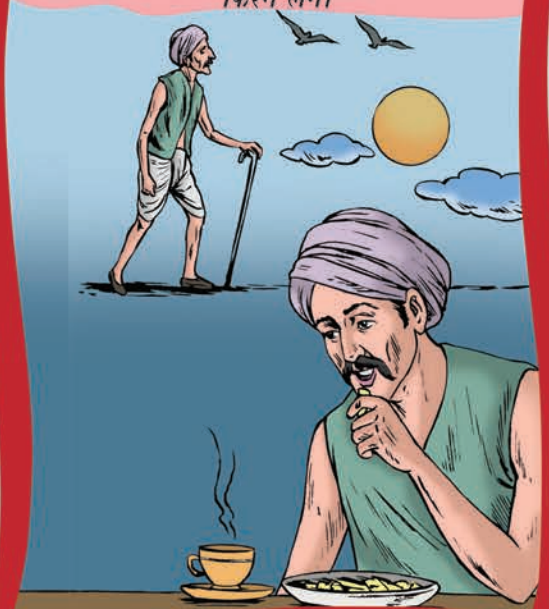

दूसरी तरफ,

क्या! मैं दो-तीन दिन ही जी पाऊँगा!

ऐसे कमज़ोर पड़ जाने से दूसरे दिन तो वह इतना बीमार हो गया, कि मरने जैसा हो गया।

दूसरे दिन।

चलो न, आज उन दोनों को देख आऊँ।

देखा तो बूढ़े बाबा आराम से चाय और गाँठिया खा रहे थे।

बाबा, आप तो बहुत आनंद में दिख रहे हो। क्या बात है?

जब से तुम्हारी चिट्ठी पढ़ी है तब से मैं आनंद में रहने लगा हूँ और तबियत भी अच्छी रहने लगी है। अब तो मैं घूमता, फिरता, खाता, पीता, मज़े करता हूँ।

फिर वैद्य युवक के पास गए। युवक तो बेचारा मरने जैसा हो गया था।

अरे क्या हालत हो गई तुम्हारी?

आपकी चिट्ठी पढ़ी तब से मेरी ऐसी हालत हो गई है।

वैद्य को जाँच करने से मालूम हुआ कि दोनों की चिट्ठियों की अदलाबदली हो गई थी। इसलिए बूढ़े बाबा, नाखून में भी रोग नहीं है ऐसा जानकर "मैं एकदम तंदरुस्त हूँ" ऐसा सोचने लगे, और युवक "अब मैं मरनेवाला हूँ" ऐसा सोचने लगा।

भाई, तुम्हें कुछ भी रोग नहीं है। बेकार चिंता मत करो। आनंद में रहो।

यह सुनकर युवक फिर से अच्छा होने लगा और बूढ़े बाबा को कुछ न कहकर, आनंद में ही रहने दिया।

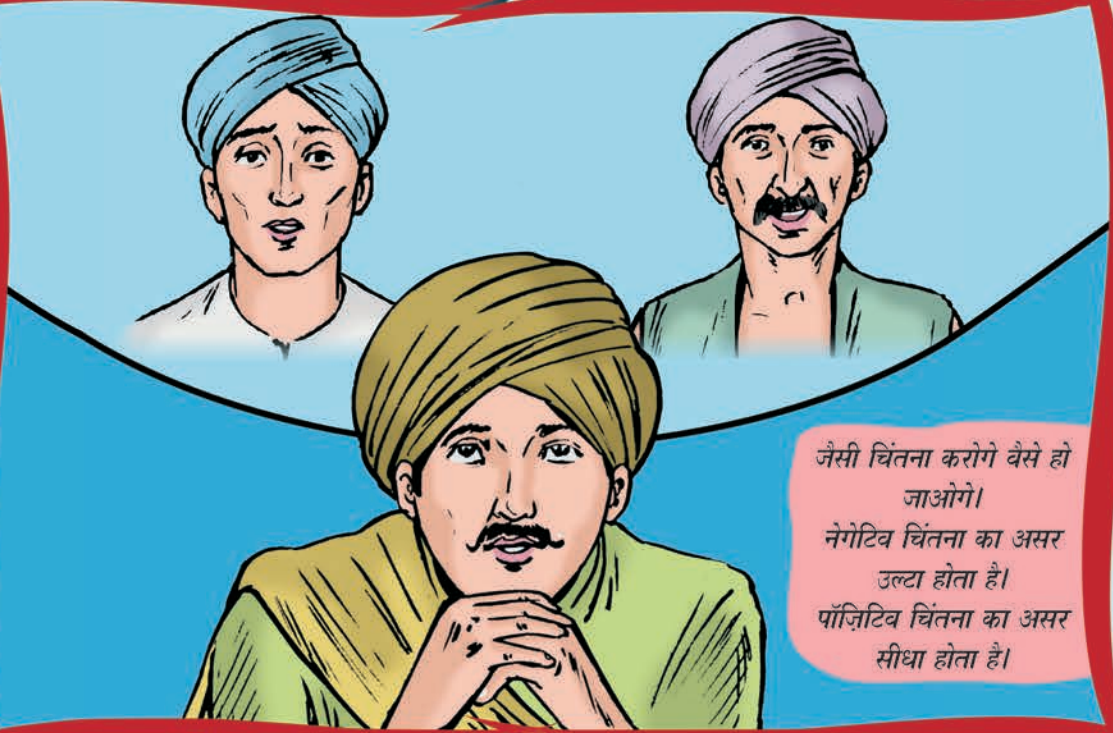

जैसी चिंतना करोगे वैसे हो जाओगे।
नेगेटिव चिंतना का असर उल्टा होता है।
पॉज़िटिव चिंतना का असर सीधा होता है।

# बस का एक यादगार सफर

पैनिक : "मुझे क्या?"

हॉस्पिटल के रूम में

दादी, अब मैं निकलती हूँ, वर्ना मेरी बस चली जाएगी। आप अपना ध्यान रखना। मैं फिर मिलने आऊँगी।

उत्सवी जा ही रही थी, तभी रूम में नर्स (शिखा आन्टी) आई ।

अरे वाह उत्सवी, तुम दादी से मिलने आई हो? इसीलिए दादी के चेहरे की रौनक ही कुछ और है।

थोड़े फूल फूलदान में रखते हुए, नर्स ने एक डिब्बा दादी के पलंग के पास की टेबल पर रखा।

उत्सवी, मैंने दादी के लिए बिस्किट बनाए हैं। तुम भी लो।

थैन्क-यू!

नर्स के जाने के बाद,

सभी की लाड़ली है शिखा! हरएक पैशेन्ट का इतनी अच्छी तरह ध्यान रखती है, जैसे खुद के ही परिवार की देखभाल कर रही हो!

घड़ी की ओर देखते हुए,

अरे, मैंने तुझे फिर बातों में लगा लिया। तुझे देर हो जाएगी। सँभलकर जाना।

हाँ दादी।

उत्सवी अपना बैग लेकर बस-स्टॉप की तरफ दौड़ी।

बस स्टॉप पर सभी पैसेन्जरों को बस का इंतज़ार करते देखकर उत्सवी को शांति हुई,
आज तो बहुत थक गई हूँ, बस में सीट मिल जाए तो अच्छा। घर पहुँचने तक एक लंबी नींद निकाल लूँगी।
SALE
तभी उसे बस का हॉर्न सुनाई दिया.....फटाफट वह बस में चढ़ गई।
अहमदाबाद की एक टिकिट देना।
बस के अंदर देखा तो पीछे की एक सीट खाली थी, जैसे-तैसे करके वहाँ पहुँचकर सीट पर बैठ गई। उसने आँखें बंद कर लीं।
तभी बस में जोर से ब्रेक लगा।
ओ माई गॉड!
झटके से उसकी आँख खुल गई। देखा तो आगे की सीट के सहारे खड़ी हुई एक बूढ़ी माँजी गिरने को थीं।
माँजी को मेरी सीट दे देनी चाहिए, उन्हें बहुत तकलीफ हो रही होगी।
उसने आसपास देखा।
किसी को परवाह नहीं तो मैं क्यों दूँ? मुझे क्या लेना-देना? वैसे भी मैं कितनी थकी हुई हूँ।

उत्सवी ने फिर से आँखें बंद करके सोने की कोशिश की लेकिन आँखों के सामने दादी माँ का चेहरा आ गया।

लेकिन बहुत नींद आने की वजह से उत्सवी ने मन से विचार निकाल दिया। थोड़ी ही देर में उसे शिखा आन्टी का चेहरा दिखने लगा।

यह विचार आते ही उत्सवी झटके से उठ गई।

ऐसा कहकर वह उत्सवी की सीट पर बैठ गई। उत्सवी उनकी जगह शांति से खड़ी रही। सीट देकर तो उसकी नींद गायब ही हो गई और उसने एक अनोखी ताज़गी और स्फूर्ति महसूस की!

# फँसाव


टॉपिक: 'लोभ को नहीं रोका'
वन में आज वानर उत्सव मनाया जा रहा था। तरह-तरह के फलों और वनस्पतियों की दावत थी।
मदनिया, खाना कितना लुभावना लग रहा है! सोचता हूँ क्या खाऊँ और क्या नहीं!
चिम्पू जितना ले सकता था, उतना सब ले लिया। केला, सेब, अमरूद, मोसंबी, संतरा....
दावत है इसलिए खाना तो खाऊँगा ही न! लेकिन मैं जितना खा सकता हूँ उतना ही लिया है।
अरे, आज तो जितना खाना हो उतना खाने की छूट है।
छूट भले ही हो, लेकिन मैं तो इतना ही खा पाऊँगा। मैं उस पेड़ के नीचे बैठा हूँ। तुझे जो कुछ लेना है, वह लेकर वहाँ आ जाना।
चिम्पू ने तो पेड़ के नीचे सभी फल और वनस्पतियों का ढेर लगा दिया और शांति से खाने बैठा। थोड़ी देर बाद,
वाह! मज़ा आ गया! कितना मज़ेदार है!
सचमुच हं ... ओई..या...मेरा पेट तो बहुत भर गया।

चल, अब हम अपने दोस्तों के साथ खेलने चलते हैं।

इतनी जल्दी? मेरा तो सिर्फ पेट ही भरा है, मन नहीं भरा। अभी तो कितने फल चखने बाकी हैं। जितना खाना हो उतना खाने की छूट है, याद है न तुझे?

लेकिन चिम्पू, खाने की छूट है तो इसका मतलब ऐसा नहीं है कि बिना भूख के भी खाते रहें। संतोष जैसा कुछ है या नहीं? मैं तो चला खेलने।

लेकिन चिम्पू को अभी तक संतोष नहीं हुआ था। वह तो फिर से अपने लिए ढेर सारा खाना ले आया और खाता ही गया।

थोड़ी देर बाद,

चिम्पू, ओ चिम्पूड़े...हम सब एक मज़ेदार खेल, खेल रहे हैं।

लेकिन, चिम्पू को तो बोलने का भी होश नहीं था।

सब कितने मज़े कर रहे हैं और मुझे कितनी भयंकर तड़फड़ाहट हो रही है। मैंने थोड़ा कम खाया होता तो?!

तभी, दूर से कुछ बंदरों की चीखें सुनाई दीं।

भागो भागो...वन में शिकारी आए हैं कईयों को तो पकड़ भी लिया है।

सभी बंदर भयभीत होकर इधर-उधर भागने लगे। शंभू काका वृद्ध लेकिन अक्लमंद थे। वे घनी झाड़ियों में छुप गए।

भरे हुए पेट के कारण चिम्पू जल्दी से भाग नहीं सका, वह घबरा गया। तभी उसने चने से भरी हुई मटकी देखी। वह नज़दीक जा ही रहा था कि तभी...

चिम्पू, उसमें हाथ मत डालना।

लेकिन इसमें चने हैं।

नहीं, नहीं, वापस आ जा। अपने लालच के कारण ही शिकारियों की युक्ति काम करती है।

युक्ति...?

हाँ, ये शिकारी बहुत चालाक होते हैं, वे मटकी में चने रखते हैं। हम लोग लालच से मुट्ठी भरकर चने निकालने जाते हैं लेकिन भरी हुई मुट्ठी की वजह से हाथ फँस जाता है, मुट्ठी नहीं खोलते इसलिए हाथ बाहर नहीं निकाल पाते। और अंत में पकड़े जाते हैं।

थोड़े कम लेते तो नहीं फँसते, लेकिन मुट्ठी भरी तो क्या हो? यह तो लालच का फँसाव है! है न?

चिम्पू क्या कहता? शरम से नीचे देखने लगा। आज उसने भी तो फँसाव की तड़फड़ाहट का स्वाद चखा था न! उस दिन से वह ज़रूरत से ज्यादा लेना भूल गया।

# मोस्ट वैल्यूबल प्लेयर

टॉपिक :
"मैं रह गई"

और फिर अभय ने गोल किया!
सुपर्ब गोल बाइ अभय!

सचमुच, अभय चैम्पियन है। उससे कोई टक्कर नहीं ले सकता।

सच में!

गेम के बाद,

कॉगैचुलेशन "मोस्ट वैल्यूबल (कीमती) प्लेयर" एक बार फिर ट्रॉफी जीतकर तुमने साबित कर दिया कि इस खिताब का सही हकदार सिर्फ तुम ही हो।

थैंक्स।

गेट गेम, अभय! आज फिर से तुमने अपने स्कूल का नाम रोशन किया। अब हम शनिवार को शाम ४ बजे प्रैक्टिस के लिए फिर से मिलेंगे।

ओके सर!
थैन्क यू।

शनिवार की शाम को तरंग और रौनक भी अभय की प्रैक्टिस देखने आए। फील्ड में एन्टर होते ही उन्होंने तालियों की गड़गड़ाहट सुनी।अभय ने गोल किया लगता है।

Abhay seems to have scored the goal.

वहाँ जाकर देखा तो अभय तो नहीं लेकिन कोई दूसरा ही था।
सुपर्ब आरुष। तुम ने बहुत अच्छा खेला!
यह कौन है?
हमारी टीम का नया प्लेयर, आरुष। आज ही टीम में शामिल हुआ है। नया ही है लेकिन अभी से ही कोच और हम सबका दिल जीत लिया है।
ओह रियली?
हाँ, सचमुच, ज़ोरदार खेलता है।
थोड़ी देर बाद,
आज प्रैक्टिस के लिए लेट हो गया। गेम के बाद आप लोगों से मिलता हूँ।
श्योर!
यार, अभय को नए प्रतिस्पर्धी के बारे में पता चलेगा तो उसे कितना दुःख होगा न!
हाँ, मुझे तो उसकी चिंता हो रही है।

प्रैक्टिस के बाद,

अभय, वह नए प्लेयर आरुष के कारण तुम अपसेट तो नहीं हो न?

अपसेट? मैं क्यों अपसेट होऊँगा?

क्यों? अब टीम में और लोगों में तुम्हारा स्थान नहीं रहेगा, इस बात से तुम्हें डर और असुरक्षित तो महसूस नहीं हो रही है न?

असुरक्षा? बल्कि मुझे तो सुरक्षित लग रहा है कि अब आरुष के कारण हम अगला गेम ज़रूर जीत पाएँगे। हर गेम में टीम जीते, वही टीम का लक्ष्य होता हैं और अब वह लक्ष्य को पाने के लिए मुझे पार्टनर मिल गया है। मैं तो बहुत खुश हूँ।

फिर तो हरएक सेशन में कोच आरुष को बहुत प्रोत्साहन देने लगे। अभय भी आरुष को प्रोत्साहन देने में शामिल हो जाता। उसे कभी भी ऐसा नहीं लगा कि आरुष कोच का चहेता हो जाएगा और वह रह जाएगा।

फाइनल गेम का दिन था, आज आरुष के नाम का बोलबाला था।

आरुष, आरुष, आरुष ...

और आरुष ने अंतिम गोल किया और टीम जीत गई।

अवॉर्ड समारोह शुरू हुआ।

गेम के "मोस्ट वैल्यूबल प्लेयर" की ट्रॉफी जाती है.... आरुष को।

तालियों की गड़गड़ाहट के बीच आरुष ने ट्रॉफी स्वीकार की।

थैन्क यू। लेकिन इस अवॉर्ड का सही हक़दार तो अभय है, वह हमारी टीम का कीमती ही नहीं पर मोस्ट नोबल प्लेयर है। टीम के बेस्ट प्लेयर होते हुए भी अभय ने कभी अपना स्थान बनाए रखने के लिए मेरे साथ स्पर्धा नहीं की। जब से मैं टीम में शामिल हुआ तभी से उसने मुझे बहुत प्रोत्साहित किया और अच्छा गेम खेलने के लिए टिप्स भी दीं। अभय, स्टेज पर आकर तुम्हारा अवॉर्ड स्वीकार करो।

स्टेज पर अभय और आरुष ने मिलकर प्रेक्षकों के सामने ट्रॉफी दिखाई और एक दूसरे के गले लग गए।

# कड़वी वाणी का असर

पंचिकः
'मीठी वाणी'

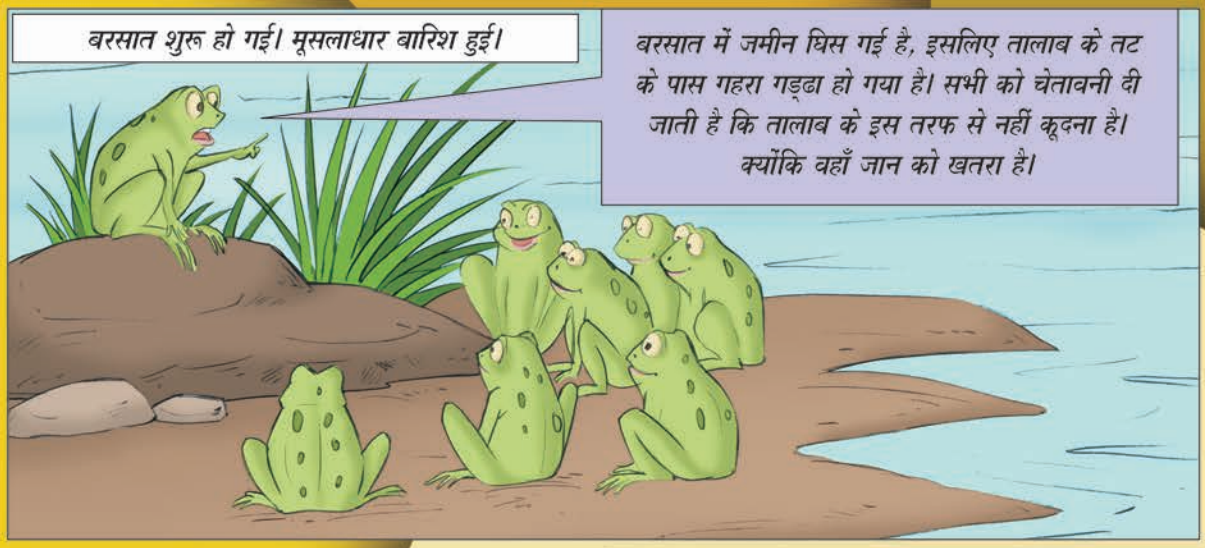

उसे सुनाई नहीं देता लेकिन तुम्हारे उल्टे भाव तो उसे पहुँचते ही हैं न।
क्या बकवास कर रहा है? इस बहरे के साथ रह-रहकर तेरा भी दिमाग खिसक गया है।
पिन्टू की आँखें भर गई।
मैं इन सब मेंढकों से अलग ही रहूँगा।
बरसात शुरू हो गई। मूसलाधार बारिश हुई।
बरसात में जमीन घिस गई है, इसलिए तालाब के तट के पास गहरा गड्ढा हो गया है। सभी को चेतावनी दी जाती है कि तालाब के इस तरफ से नहीं कूदना है। क्योंकि वहाँ जान को खतरा है।
चिन्टू और पिन्टू को इस गड्ढे के बारे में जानकारी ही नहीं थी। एक दिन खेलते-खेलते दोनों ने तट पर से गहरे गड्ढे में छलाँग लगाई।
आआआआआआआ..!! इतना गहरा गड्ढा! मुझे तो मालूम ही नहीं था। अब क्या करेंगे?
आवाज सुनकर बाकी मेंढक बाहर तट पर आ गए और ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगे।
हहाहाहा... यह दोनों तो बिल्कुल बेवकूफ हैं। अरे पिन्टू! तुझे समझाया था कि इस बहरे चिन्टू से दूर रहना। ले, गड्ढे में गिर गया न, उसके साथ!

पिन्टू घबरा गया।

अपनी यह परीक्षा है। हमें निराश हुए बिना बाहर निकलने का उपाय ढूँढना है।

लेकिन कोई उपाय नहीं मिल रहा था। घंटों बीत गए। चिन्टू और पिन्टू भूखे-प्यासे गड्ढे में से निकलने की कोशिश कर रहे थे। दूसरे मेंढक आकर चिन्टू और पिन्टू को कड़वी वाणी सुनाते।

ए बहरे! अब वहीं रहना और वहीं मरना।

सभी मेंढकों की बात सही है। अब हम कभी इस गड्ढे से बाहर नहीं निकल पाएँगे।
और अब तो चिन्टू के प्रोत्साहन की भी पिन्टू पर कोई असर नहीं हो रही थी। वह तो निराश होकर एक कौने में बैठ गया।

सभी मेंढक चिन्टू और पिन्टू का मज़ाक उड़ा रहे थे, तभी अचानक...

भागो, भागो ... साँप आया!

घबराहट के मारे डरे हुए मेंढक गड्ढे में गिर गए।

थोड़ी देर बाद...

अरे यह क्या? हम भी उसी गड्ढे में गिर गए, जहाँ से निकलने का कोई रास्ता ही नहीं है।

सभी बहुत हताश हो गए।

हम भी अब पूरी ज़िंदगी इस गड्ढे से बाहर नहीं निकल पाएँगे।

निराश मेंढकों ने बाहर निकलने की कोशिश ही छोड़ दी। एक दिन अचानक चिन्टू आकर सभी मेंढकों को इशारे करने लगा।

क्या हुआ चिन्टू? क्या कहना चाहते हो?

चिन्टू ने सभी को उसके पीछे आने का इशारा किया। मेंढकों के आश्चर्य का ठिकाना नहीं था।

सुरंग??!! तूने अकेले ही इतनी मेहनत से सुरंग बनाई! धन्य है तुझे दोस्त!

सभी मेंढक कूदते हुए सुरंग से तालाब में पहुँच गए। तालाब के किनारे...

पिन्टू, आज मुझे समझ में आया कि हमारी कटु वाणी से तुझे तो चोट पहुँची ही है लेकिन अंत में वह हमारे ऊपर ही पड़ी। हम ही ऐसे हताश हो गए थे कि आई हुई परीक्षा से बाहर निकलने की हिम्मत ही नहीं जुटा पा रहे थे।

हाँ, सही बात है। जिसके लिए हमने इतना उल्टा बोला उसने अपनी पॉज़िटिव सोच से हम सबको बचा लिया। चिन्टू, पिन्टू हमें माफ कर दो।

और ऐसा कहकर सभी मेंढक चिन्टू और पिन्टू के गले लग गए।

उनका स्वर्ग
टॉपिक: "सुख या दुःख मान्यता से ही!"
भीखू नाम का किसान एक छोटी सी झोपड़ी में अपनी पत्नी लक्ष्मी के साथ रहता था। एक दिन,
भीखू, तुम्हारे चाचाजी गुज़र गए। चाचीजी बहुत दुःखी हैं। उन्होंने कहलवाया है कि तुम उन्हें यहाँ ले आओ।
क्या?! चाचीजी को यहाँ ले आऊँ? लेकिन मैं उन्हें कहाँ रखूँगा?
मैं यह सब नहीं जानता।
बेमन से भीखू चाचीजी को अपने घर ले आया। थोड़े दिन बाद,
चाचीजी पूरी रात खर्राटे लेती हैं। इस वजह से मुझे ज़रा भी नींद नहीं आती। मुझे नहीं लगता कि हम चाचीजी को अपनी झोपड़ी में रख सकेंगे।
हाँ, उनके आने से अपना घर भी छोटा पड़ता है। रसोई में तो चलने की जगह भी नहीं रहती। आप अपने मुखियाजी की सलाह लो न। वे बहुत समझदार हैं। वे ज़रूर कोई उपाय बताएँगे।
मुखियाजी ने भीखू की बात सुनी।
भीखू, तेरे पास कोई पशु है?
हाँ मुखियाजी, एक गाय और एक बकरी है।

ठीक है, तो एक काम कर। गाय को घर में ले आ।

क्या?! घर में? लेकिन मैं उसे रखूँगा कहाँ?

घर के दरवाजे से बाँध देना। बस तेरी सभी समस्यों का अंत आ जाएगा।

घर आकर, भीखू ने मुखियाजी का बताया हुआ उपाय लक्ष्मी को बताया।

ऐसा कहा मुखियाजी ने? मुखियाजी तो विद्वान हैं। हमें उनके उपाय को अजमाना ही चाहिए।

उसके बाद, भीखू और लक्ष्मी की ज़िंदगी बहुत ही खराब हो गई, घर में आते-जाते गाय के साथ टक्कर होती ही रहती थी। इतना ही नहीं, लेकिन गाय बैठी-बैठी उनका कम्बल भी चबा गई।

एक हफ्ते बाद,

जाओ, जाकर मुखियाजी से कहो कि अभी की स्थिति पहले से सौ गुनी ज्यादा खराब है।

मुखियाजी ने फिर से भीखू की बात ध्यान से सुनी।

तुमने कहा था न कि तुम्हारे पास एक बकरी भी है? एक काम करो, बकरी को भी घर में ले आओ।

लेकिन मुखिया जी, बकरी को कहाँ रखूँगा?

तुम्हारे पलंग के पास उसे बाँध देना। अब तो ज़रूर तुम्हारी सभी समस्याओं का अंत आ ही जाएगा।

भीखू की बात सुनकर लक्ष्मी रोने लगी।

ऐसा कहा मुखियाजी ने! मुखियाजी हम से यह क्या करा रहे हैं?! घर में जहाँ देखो वहाँ गाय का गोबर है और अब वे कह रहे हैं कि बकरी भी घर में ले आएँ? बस, बहुत हो गया।

लेकिन, तुमने ही तो कहा था कि वे पढ़े लिखे हैं, इसलिए हमें उनकी सलाह पर अमल करने की कोशिश करनी चाहिए।

आँसू पोंछकर लक्ष्मी बकरी को घर में ले आई। लेकिन एक दिन भी उसने बहुत मुश्किल से निकाला।

दूसरे दिन लक्ष्मी भी भीखू के साथ मुखियाजी के पास गई।

मुखियाजी, कल आपने इन्हें बकरी घर में लाने के लिए कहा, उसकी पहुँच में जो था, वह सब खा गई। इतना ही नहीं.....

बहन... लेकिन.....

मुझे मेरी बात पूरी करने दें। आज मैं बहुत ही मज़बूर होकर आपके पास आई हूँ। और उसका कारण है, वह भयंकर बदबू। आप कभी बकरी के पास सोए हैं? मैंने पूरी रात एक झपकी तक नहीं ली। आप ही बताओ, अब हम क्या करें?

एक काम करो। अब बकरी और गाय को घर से बाहर ले जाओ। घर साफ कर डालो और फिर मुझे कहो कि कैसा लगता है।

दो दिन बाद,
आपका बहुत बहुत धन्यवाद। अब हमारा घर एकदम साफ और अच्छा हो गया है। बदबू भी नहीं रही।

लेकिन चाचीजी का क्या? तुम्हें घर छोटा तो नहीं लगता न?
छोटा? नहीं, मुखियाजी। अब तो मुझे घर महल जैसा लग रहा है।

स्वर्ग जैसा! चाचीजी हैं तो मुझे मदद रहती है। अब, मैं कभी शिकायत नहीं करूँगी।

थोड़ी मुश्किल उठाकर ही सही लेकिन तुम्हें सही बात समझ में तो आ गई न! जहाँ कुछ भी दुःख नहीं होता, वहाँ कई बार लोग दुःख खड़ा कर लेते हैं। सच्ची समझ से मालूम पड़ता है कि छोटा लगनेवाला घर वास्तव में "स्वर्ग" ही था!

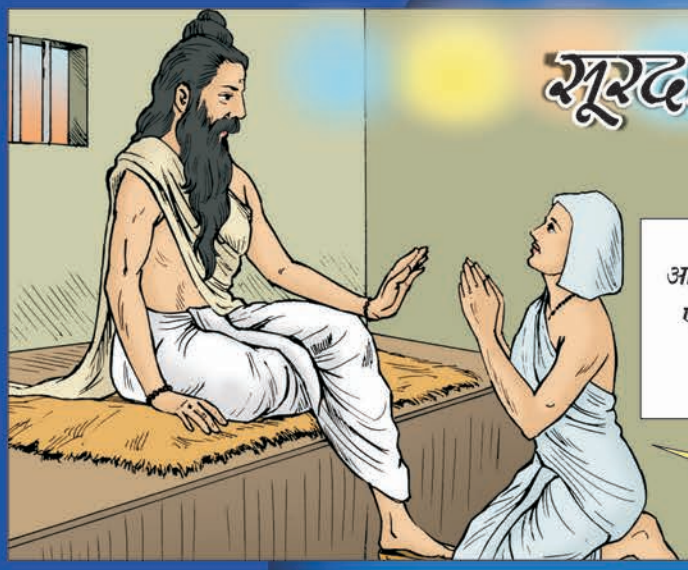

सूरदास
टॉपिक :
'विरोधी उपकारी'
आध्यात्मिक मार्ग पर प्रगति करने हेतु सूरदास नामक एक भक्त, गुरु की शरण में आए। अध्यात्म ज्ञान पाने की तमन्ना उन्होंने गुरु को बताई।
हे गुरुदेव, मुझे आत्मा का ज्ञान दीजिए।
ज्ञान प्रदान करने से पहले सूरदास की भूमिका तैयार करने के लिए गुरु ने उन्हें एक आज्ञा दी...
मैं तुम्हें ज्ञान प्रदान करूँ उससे पहले तुम्हें मेरी एक आज्ञा का पालन करना पड़ेगा।
ज्ञान प्राप्ति के लिए मैं कुछ भी करने को तैयार हूँ। आप आज्ञा दें गुरुदेव।
तुम्हारी सभी दैनिक क्रिया करने से पहले तुम ईश्वर का स्मरण करना। एक हफ्ते तक ऐसा करने के बाद तुम नदी में स्नान करके मुझसे मिलने आना।
गुरुदेव की आज्ञा के अनुसार सूरदास ने एक हफ्ते तक हर काम से पहले निष्ठापूर्वक ईश्वर का स्मरण किया।

हफ्ते बाद स्नान करके, साफ कपड़े पहनकर, वे गुरुदेव से मिलने गए। गुरुदेव की कुटिया के बाहर एक व्यक्ति झाड़ू लगा रहा था। गलती से उसकी झाड़ू सूरदास को लग गई।

गुरुदेव ने यह देखा। जब सूरदास फिर स्नान करके गुरुदेव से मिलने आए तब...

दूसरे हफ्ते भी झाड़ूवाले ने फिर से सूरदास के कपड़े बिगाड़े। फिर से सूरादस को उस पर क्रोध आया और फिर से गुरुदेव ने हफ्ते तक ईश्वर के नाम का स्मरण करने की आज्ञा दी। ऐसा लगभग चार हफ्तों तक चला।

पाँचवे हफ्ते, जब झाड़ूवाले ने सूरदास पर कूड़ा फेंका, तब झाड़ूवाले के आश्चर्य का पार नहीं था। हर बार की तरह क्रोधित होकर अपमान करने के बजाय सूरदास ने हाथ जोड़कर झाड़ूवाले से माफी मांगी...
भाई, मैं आपका आभार मानता हूँ और आपको मैं गुरु पद पर स्थापित करता हूँ क्योंकि आपने मुझे क्रोध को जीतना सिखाया।
यह दृश्य देखकर गुरुदेव बहुत खुश हुए।
आज तुम अध्यात्म का पहला पाठ सीख गए। तुमने क्रोध दिलानेवाले को उपकारी माना और क्रोध को जीत लिया...
...इस तरह जीवन में आनेवाली हर एक कठिन परिस्थितिओं को तुम अपनी कमियाँ दूर करने का मौका समझोगे तो आध्यात्मिक मार्ग में बहुत प्रगति करोगे। आज से तुम आश्रम में रहकर स्वाध्याय करना।
विनयपूर्वक गुरु को प्रणाम करके, सूरदास ने अपने आध्यात्मिक मार्ग की यात्रा शुरू की।

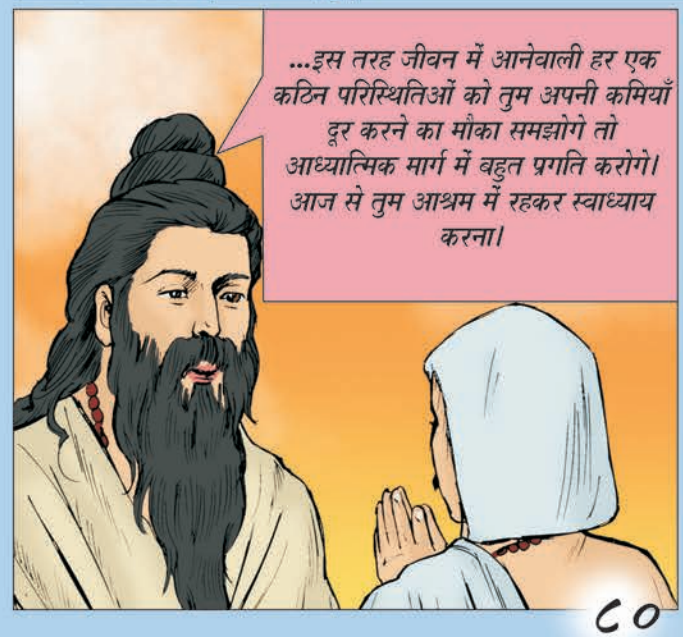

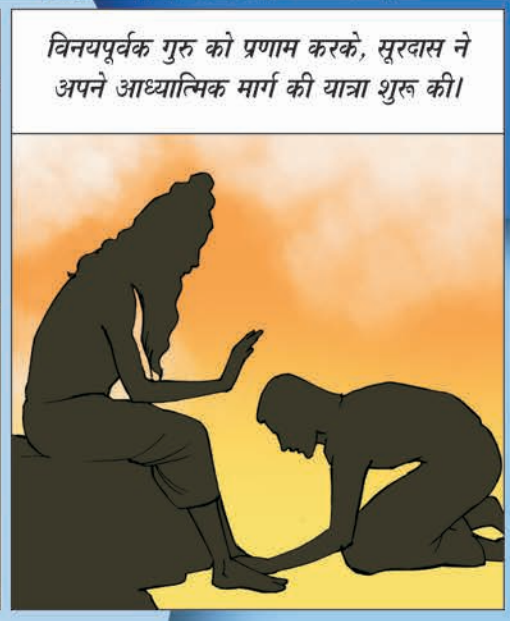

वैषिक :
'प्रामाणिकता'

# वीडियो रिकॉर्डिंग

क्लास में इतनी ज्यादा शिष्टता और शांति कभी नहीं रहती थी। लेकिन आज तो क्लास के सबसे शैतान बच्चे भी पढ़ाई कर रहे थे। कारण??

कारण यह था, कि क्लास रूम में मिसेज़ रॉय अपने वीडियो कैमरे के साथ खड़ी थीं। मिसेज़ रॉय स्कूल पर एक वीडियो फिल्म बना रही थीं, जो एन्युअल फंक्शन में प्रिन्सिपल साहब और सभी अभिभावक देखने वाले थे।

क्लास खत्म होते ही...

मेडम, आज क्लास में डिसिप्लिन देखकर आपको ऐसा ही लगा होगा न कि मिसेज़ रॉय रोज़ अपना वीडियो कैमरा लेकर हमारी क्लास की फिल्म उतारने आएँ तो कितना अच्छा!

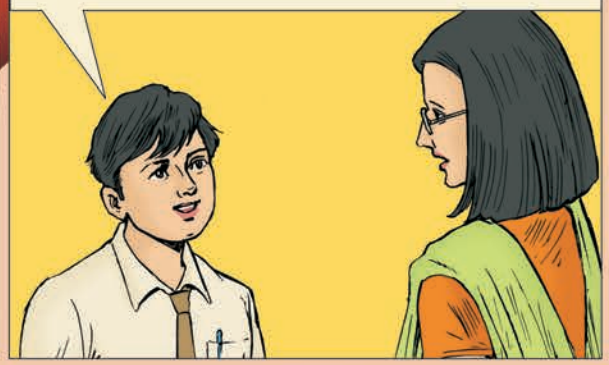

निगम को लगा कि उषा टीचर उसके जोक पर हँसेंगी। लेकिन वे एकदम गंभीर हो गईं।

हम जब भी कुछ गलत करते हैं, तब अपने भीतर बैठे हुए भगवान कैमरे की तरह सबकुछ रिकॉर्ड करते रहते हैं। लोगों को यदि यह समझ में आ जाए, तो वे गलत काम करने से रुक जाएँ।
लेकिन मेडम की बात में निगम को रुचि ही कहाँ थी? मन में तो दूसरी ही धुन सवार थी।
आज घर पर मामाजी, मामीजी, मौसाजी, मौसीजी और पर्व आनेवाले थे। आज पर्व के साथ चेस खेलनेवाला हूँ। हर बार की तरह आज भी उसे हरा दूँगा।
दोपहर को खाना खाकर सभी बातों में लग गए। निगम के रूम में जाकर पर्व और निगम चेस खेलने लगे।
थोड़ी देर बाद,
चेक
निगम को पसीना आ गया। पहली बार वह हार रहा था।
एक मिनट, मैं अपने लिए थोड़ा नाश्ता ले आता हूँ।
पर्व के जाने के बाद, निगम ने रूम में नज़र घुमाई। वहाँ कोई नहीं था।
क्या करूँ? गेम थोड़ा अदलाबदली कर दूँ? पर्व को पता ही नहीं चलेगा। नहीं तो हारना पड़ेगा। यह कितना शर्मनाक होगा!
पर्व, निगम, बच्चा पार्टी, सभी बाहर आ जाओ। आप सभी के लिए एक सरप्राइज़ है।

मामाजी ने सबको टी.वी. के आगे बैठ जाने के लिए कहा।

यादगार रहे इसलिए मैंने अपने वीडियो कैमरे में, हम सब के साथ में बिताए सुंदर पल आज रिकॉर्ड कर लिए हैं। नैचुरल रिकॉर्डिंग हो, इसलिए मैंने किसी को बताया नहीं था.

मामाजी ने टी.वी. शुरू किया। देखते-देखते मामाजी कमेन्टरी करते गए। थोड़ी देर बाद....

और यह है अपना मास्टर चेस प्लेयर पर्व मेहता, जो अभी पेट पूजा में बिज़ी है।

और फिर दृश्य आया निगम का। यह तो वही पल था, जब निगम चीटिंग करके गेम अदलाबदली कर देने की सोच रहा था। निगम के हृदय की धड़कन बढ़ गई।

और यह है अपना दूसरा ग्रान्ड मास्टर निगम शाह, जो अभी गंभीरता से कुछ सोच रहा है।

थैंन्क गॉड, मैंने चीटिंग नहीं की। नहीं तो पूरे परिवार के सामने मेरी कैसी फज़ीहत हुई होती। चीटिंग करके मैं जीतकर भी हार गया होता।

मामाजी, मुझे भी इस वीडियो की एक कॉपी देना।

हाँ, हाँ, उसे ज़रूर देना। आज पहली बार चेस में यह मेरे सामने हार गया है। इसलिए रिप्ले देखकर यह फिर से प्रैक्टिस करेगा। सही बात है न निगम?

हाँ, बिल्कुल सही बात है।

आज तो मैं हारकर भी जीत गया हूँ। आज से मैं तय करता हूँ कि चेस में या ज़िंदगी में ऐसी कोई चीटिंग नहीं करूँगा, जिसका रिप्ले देखने में मुझे ज़रा भी घबराहट हो।

# बालविज्ञान की अन्य प्रकाशित पुस्तकें

गुजराती और अंग्रेज़ी भाषा में उपलब्ध

## स्टोरी

## मन्थली मेगेजीन

युवाओं के लिए
Akram youth



बच्चों के लिए
अक्रम एक्सप्रेस

## दादा भगवान

## मानव में से महामानव (नील) सीरीज़ बुक

## गेम्स

## V.C.D. & D.V.D.

वेबसाइट

**Visit kids.dadabhagwan.org**

ISBN 978-93-82128-57-1

Printed in India

₹ ૪૫